डायरीक खाली पन्ना

कुमार पवन



नाला मे बजबजाइत पिल्लू

ओ नियमित डायरी लिखैत छलाह। प्राय: पैंतीस- छत्तीस बर्खक आदति छलनि। मिडिल स्कूल मे पढ़ैत रहथि तँ गोपाल बाबू मास्टर साहेब सँ प्रेरणा भेटल रहनि। हिंदीक शिक्षक छलाह गोपाल बाबू। बच्चा सभ सँ नित्य डायरी लिखबैत छलाह। तहिया ओ अपन कापी मे सभ सँ उपर मे दिनांक आ गामक नाम अंकित क' लिखब शुरू करैत छलाह, 'आज मैं प्रात: पाँच बजे नित्यक्रिया से निवृत्त हुआ। तदुपरांत बस्ता लेकर दरवाजे पर बैठा। सबसे पहले गणित के सवाल हल किए । तदुपरांत अंग्रेजी और हिंदी का लिखना लिखा... फिर स्नान करके भोजन किया... बस्ता लेकर विद्यालय पहुँचा...' आदि... आदि। हाइस्कूल मे जाइत-जाइत ई अभ्यास छुटि गेलनि। मुदा, कॉलेज मे गेलाक बाद ई निश्चय कयने रहथि जे प्रतिदिन डायरी लिखताह। कदाच कहियो महान बनि गेलाह तँ आत्मकथा लिखबाक बेर विस्मरण भेला पर अफसोच नहि ने हेतनि जे विगत जीवनक लेखा-जोखा किएक नहि रखलहुँ!

विलक्षण स्मरणशक्ति वला कतोक लोक अपन जीवनक एक-एक टा सूक्ष्म विवरण मोन रखैत अछि। परंच, अधिकांश लोक अंदाजी-फिकेशन सँ काज लैत अछि। लहि गेलै तँ ठीक। नहि तँ मुँह चियारि दाँत झलका खेद प्रकाश क' देत। एहन सन जे 'सॉरी, मिस्टेक भ' गेलै।' माने ई जे गलती अनजान मे भेल अछि जानि-बूझि क' नहि। ओना लोक सभ नीक जकाँ जनैत अछि जे प्राय: सभ अपन आत्मकथा मे एतेक महान किऐ लगैत अछि। समीक्षक सबहक एहि तरहक कतोक टिप्पणी ओ देखियो चुकल छलाह। तेँ प्रिंसिपल साहेब अपन छात्र-जीवनहि मे निश्चय क' चुकल छलाह जे ककरो एहन टिप्पणी करबाक अवसर देबाक कोन प्रयोजन!

ओ अपन छात्र-जीवन मे अति मेधावी छलाह। सुपौलक विलियम्स हाइस्कूलक हेडमास्टर दीपनारायण सिंहक विश्वास छलनि—उमाकांत आदर्श विद्यार्थी अछि। जेहन लुहलुहार एकर प्रतिभा छै ताहि सँ तँ लगैत अछि जे एक-ने-एक दिन ई सूर्य जकाँ चमकत।

आ से ठीके। जखन मैट्रिकक परीक्षा मे संपूर्ण बिहार मे ओ दोसर स्थान पर अयलाह तँ परोपट्टा मे घरे-घर हुनक नामक डंका बाजि गेल रहनि। एलीमेंट्री आ एडवांस मैथेमैटिक्स मे दू सय मे दू सय। पहिने तँ ततेक नहि मुदा आब कने-कने उमाकांतहु केँ ई विश्वास होअय लागल रहनि जे ठीके ओ महान बनबाक पथ पर आबि गेल छथि। महान लोक कोनो नाँगरि वा सींग ल'क' जन्म लैत अछि? एहिना ने नहू-नहू प्रगति करैत लोक महानता प्राप्त करैत अछि...। आ एकर बादे ओ निश्चय कयने रहथि जे नियमित डायरी लिखताह जाहि मे एक-एक टा सूक्ष्म बात टीपिक' रखताह...। तहिया सँ ओ निरंतर डायरी लिखैत रहलाह मुदा... आइ! आइ एहि 'मुदा' पर आबि ओ अटकि गेल छलाह...। ई 'मुदा' मुदइ जकाँ हुनका कष्ट द' रहल छलनि...!

अपन मकानक विस्तृत लॉन मे पूब मुँहेँ बेंतक कुर्सी पर बैसल प्रिंसिपल साहेबक आगाँ बेंतेक सेंट्रल टेबुल छलनि। टेबुलक उपरका भाग पर सोलह मिलीमीटरक मोटका काँच आ ताहि पर एक कात दू-चारि टा अखबार-पत्रिका। माँझ टेबुल पर टाइम्सक बेशकीमती डायरी। डायरीक पन्ना खुजल आ ताहि पर राखल पार्कर पेन। कॉलेज सँ जाहि मन:स्थिति मे घुरल छलाह ताहि मे किछु खयबाक इच्छा नहि छलनि। खाली एक कप चाह पीलनि आ दुनू बेकती आबि क' लॉन मे बैसलाह—माघक रौदक आनंद लेब' लेल। श्रीमती तँ किछुए कालक बाद हाफी करैत कहलथिन, ''हमरा तँ औंघी लागि रहल अछि। की करब? चलब घर?''

प्रिंसिपल साहेब एखन एही सँ तँ बाँच' चाहैत छलाह। साहस जवाब द' रहल छलनि। सोझ-सरल स्वभावक श्रीमतीक निश्छलता हुनका परेशान क' रहल छलनि। ओना हुनका अपन अभिनय क्षमता पर विश्वास छलनि। एखन धरि तँ ओ आभास नहि होअय देने छलथिन। तेँ तेहन कोनो खतराक आशंका नहि बुझि पड़ि रहल छलनि। श्रीमतियो केँ कोनो शंका भेल होनि आ ओ थाह लेबाक प्रयास क' रहल होथिन—सेहो आभास एखन धरि अपना नहि भेल छलनि। तखन के जानय सियाराम गति? कखन की भ' जाय, से के कहि सकैए? बेसी आवेश उमड़ने लोक बजैत नहि अछि, बड़बड़ाय लगैत अछि। बेसुरती मे मुँह सँ किछु बहरा गेलनि तँ अनर्थ भ' सकैत छलनि। तेँ ओ ताधरि थोड़ेक

फराके रहय चाहैत छलाह जाधरि सभ तरहेँ निफिक्किर ने भ' जाथि। ''अहाँ चलू। हम थोड़े लिखि-पढ़ि क' आबि जायब।'' ई सुनैत मातर हाफी करैत श्रीमती चलि गेल छलथिन।

एम्हर रहि गेलाह प्रिंसिपल साहेब। आगाँ मे राखल खुजल डायरी आ ओकर चकाचक उज्जर रूलदार पन्ना पर राखल पार्कर पेन...!

प्रिंसिपल साहेबक मकानक वामा कात छलनि तंत्रवती गीता भवनक विशाल प्रांगण। गीता भवन मे रहनिहार छात्र सभ अपन-अपन पसिन्नक काज मे लागल छल। किछु छात्र भवनक छत पर बैसि तँ किछु अपन कोठली मे परीक्षाक तैयारी मे लागल। एम्हर भवनक प्रांगण मे किछु छात्र सभक झुण्ड सचिन आ सौरव बनबाक उपक्रम मे खेलैत कम आ हल्ला अधिक करैत छल। सामने विशाल दिग्घीक पानि सँ अबैत दुर्गंधक भभक। दिग्घीक पछबारी भीड़ पर धरेश्वरी, काली, पुबारी भीड़ पर क्रिश्चियन सोसाइटीक गिरजा मे ठाढ़ ईसा मसीह, दछिनवारी कोण पर मजार मे स्थित सूफी संत आ प्राय: सब कोण पर विराजमान हनुमानजी दिन-राति दिग्घीक दिव्य दुर्गंध लैत रहबाक लेल विवश छलाह। हड़ाही आ गंगा सागर जकाँ दिग्घियो प्राय: सड़ि गेल छलै। एहि ठाम रहब मुश्किल भ' गेल छलै। एहि दुर्गंध सँ देवात्मा आ दिव्यात्मा लोकनि पर असरि पड़ैत छलनि कि नहि, से तँ वैह लोकनि बुझैत रहल हेताह परंच प्रिंसिपल साहेब कें अपना तँ बड़ घुटन होइत छलनि। पश्चाताप होइत छनि जे एतय मकान बनयबे बेकार कयलहुँ!

श्मशानक भूमि छलै एहिठाम। जहिया गीता भवन बनल रहै तहिया कतेक तमाशा भेल रहै! दागक भूमि होयबाक कारणेँ कोनो ठीकेदार कें काज हाथ मे लेबाक साहस नहि होइत छलै। कतेक तांत्रिक तामझामक संग न्यों पड़ल छलै। भवन बनलाक बाद डरेँ कोनो छात्र एत' रहय नहि चाहय। अस्तु। कहुना क' नहू-नहू छात्र सभ जुटैत गेलै। ...तकर बाद एहि भूमिक भाग जगलै। प्रारंभ मे रस्त रहबाक कारणेँ प्रिंसिपल साहेब पाँच कट्ठा ल' लेने रहथि। मकानो प्रेम सँ बनवौने रहथि। जगह-जगह सँ आनि क' फूल-फलक गाछ लगौने रहथि। मखमली घास सँ सुसज्जित कयने रहथि लॉन कें। गाम सँ अनने रहथि टू टा नोकर जे घर आ बगीचाक काज देखैत छलनि। धिया-पूता सभ अपन-अपन कर्ममय जीवन मे ओझरायल। बेटा-पुतोहु दुनू कैरियरिस्ट। दुनूक अपन-अपन महत्त्वाकांक्षा। अपन-अपन व्यस्तता। पलखति कत' छै ककरो जे आबिक' एत' रहतनि। बेटी जमायक तँ सहजहि अपन परिवार छनि, अपन संसार छनि। तेँ यदि ओ चाहबो करितथि जे एहि मकान कें बेचि लक्ष्मीसागर दिस कतहु जमीन ल' दोसर घर बनाबी तँ से करितनि के? अपना कतेक फुर्सति छनि, सेहो नीक जकाँ जनिते छलाह...।

प्रिंसिपल साहेबक नजरि फेर डायरीक पन्ना पर गेलनि...। आमने-सामनेक दुनू पृष्ठ खाली...। वाम कात सोलह जनवरी शुक्र दिन आ दहिन कात सत्रह जनवरी शनि दिन! आइ सत्रह जनवरी छलै। शनि दिन । ओ काल्हि राति डायरी नहि लिखने रहथि। ओहो पन्ना खालिए छलनि। कतौक बर्खक बाद ई पहिल अवसर छलै जखन ओ अपन जीवनक एक दिनक लेखा-जोखा अंकित नहि क' पौने रहथि। नहि क' पौने रहथि वा नहि क' सकल रहथि? अजुका तारीख समाप्त होब' मे प्राय: नौ-साढ़े नौ घंटा बाकी छलै। अजुको डायरी लिखि पौताह कि नहि, से के जानय?

डायरियो मे सत्य लिखबाक लेल अपार साहस चाही। आइ हुनका आत्मकथा लेखक लोकनिक विवशताक अनुभव भ' रहल छलनि। हुनका लागि रहल छलनि जे जँ ओ एहि दुनू पृष्ठ पर सभ टा बात लिखि जाथि तँ ओहि सँ कतेक भभक बहार हेतै! अचानक हुनका लगलनि जे ओ एक टा भयानक पिल्लू छथि जे एहि शहरक शिक्षा व्यवस्था रूपी नाला मे बजबजाइत पिल्लू सभक बीच अपन अस्तित्वक लड़ाइ लड़ि रहल छथि। एहि नाला महक जतेक पिल्लू अछि से सभ अपना-अपनी क' बेसी जगह छेंकबाक लेल एक-दोसराक माथ पर लात दैत आगाँ बढ़य चाहि रहल अछि...। दिनानुदिन पिल्लू सभक संख्या बढ़िए रहल छै आ नाला सँ उठैत भभक सँ संपूर्ण समाज छटपटा रहल अछि...।

प्रिंसिपल साहेब बेचैन भ' उठलाह। हृदयक धुकधुकी बढ़ैत अनुभव भेलनि...। पसेना चुहचुहा उठलनि...। पियासक अनुभव भेलनि...। नोकर कें सोर क' जल पिअयबाक आदेश देलथिन। जल पीबि कनेक आश्वस्तिक अनुभव कयलनि तथापि मनक बेचैनी ओहिना बनल रहलनि...।

कर्मनेढ़ाचार्यक दुःख

आइ ऑफिसो मे अत्यधिक बेचैन छलाह ओ। कथी लेल बेचैन छलाह ओ? की बात छलै? कोनो खास बात नहि छलै। बस जेना मड़ुआक रोटी आ नोन-मिरचाइ-अँचारक चटनी खयबा काल तँ बेस चहटगर लगैत छै, मुदा भोर मे नित्यक्रिया सँ निवृत्त होयबा काल बाप-दइयो करा दैत छै तहिना प्रिंसिपल साहेब काल्हि बड्ड आनंद उठौने रहथि मुदा तखन ऑफिस मे बैसल-बैसल दिनहि मे तरेगन लौकि रहल छलनि। तखन बल्ली बाबू आ छात्र संघक सचिव महोदयक दू जोड़ी आँखि तत्काल हुनका आतंकवादीक स्टेनगन जकाँ हिंसक आ आक्रामक लागि रहल छलनि जे ने तँ सोचबाक अवसर देबाक लेल तैयार छलनि आ ने हिलबाक...।

तामसक लहरि तँ तरबा सँ ल'क' मगज धरि पहुँचि चुकल छलनि, परंच निरुपायता मे मन मसोसि क' रहि जयबाक अतिरिक्त आओर किछु सुझि नहि रहल छलनि। खौंझ मे बदलि गेल दमित तामसक झोंक मे इच्छा भेलनि जे ककरो पाबी तँ मुँह नोचि ली। मुदा, से सुविधा उपलब्ध कहाँ छलनि? पहिल बात तँ ई जे ककरहु क्लच मे अयबाक संभावना नहि छलनि। दोसर ककरा पास फाजिल मुँह छलै जे सहानुभूतिवश लग मे आबि क' कहितनि जे हे लिय'! हम अपन एक टा मुँह तत्काल दैत छी। जतेक इच्छा होअय ततेक नोचैत रहू। बेसुरती मे अपनहि मुँह नोच' लागल रहथि। किछु भकभकयलनि तँ मोन पड़लनि जे जाह! अपनहुँ तँ एक्के टा मुँह अछि...। अचानक नाकक वाम पूड़ा मे सबसबाहटिक अनुभव भेलनि...। एम्हर आबि क' एना रहरहाँ होइत रहैत छलनि...। संभवत: नाक महक एक टा केस किछु पैघ भ' गेल अछि...। ई खचराहा बड्ड तंग क' रहल अछि...। ठहर...। ओ वाम हाथक चुटकी सँ ओहि केस कें पकड़ि क' रगड़य लगलाह...। एहन सन जे आइ ओकरा निर्मूल कइये क' छोड़ताह। चुटकीक बीच रगड़ाइत ओ मोट सनक केस अपन जगह छोड़ि देलक...। प्रिंसिपल साहेब बल्ली बाबू आ सचिव महोदय दिस सँ नजरि एक पलक लेल हटौलनि आ एक टा हिंसक संतुष्टि सँ ओहि केस कें देखलनि...!

मुदा, एहि सँ समस्या खतम होयबाक कोनो संभावना कहाँ छलनि? शनिक महाजाल आ चक्रवातक चपेट मे घेरायल प्रिंसिपल साहेब जेना हेहरू भेल जा रहल छलाह। अपन प्रसिद्ध गणितज्ञ दिमाग सँ मोन पाड़बाक कोशिश क' रहल छलाह जे आखिर भोरे-भोर ककर मुँह देखिक' उठल छलाह...।

ओना तँ कथित रूप सँ एशिया स्तरक प्रसिद्ध गणितज्ञ प्रिंसिपल साहेब नित्य भोरे निन्न टुटैत मातर सभ सँ पहिने अपन दुनू तरहत्थी आँखिक सोझाँ आनि कराग्रे लक्ष्मी, करक मध्ये सरस्वती आ कर मूले ब्रह्माक दर्शन करैत छलाह। मुदा, आइ सभ गड़बड़ भ' गेल छलनि। ओ अपन तरहत्थी देखब बिसरि गेल छलाह। लक्ष्मी, सरस्वती आ ब्रह्मा मे सँ किनकहु दर्शन नहि भ' सकल छलनि...।

असल मे भोरहि भोर जखन प्रिंसिपल साहेबक निन्न टूटल छलनि तखन हुनका जाहि पीड़ाक अनुभव भेल छलनि तकर पता जँ

देवदासक प्रेतो कें चलितै तँ ओ अपन त्रासदीक तुच्छता पर झखिते रहि जाइत। हुनका निन्न टुटबाक दुःख ओतेक नहि छलनि। निन्नक की छिऐ? ओ तँ सभ राति कनेक देर-सबेर अबिते छनि। परंच, आह! ओ दृश्य... ओ आनंद... ओह!! जें निन्न टुटि गेल छलनि तें ने ओ मकोर बाँसक करची सन लचकैत आ चम्पा जकाँ गमकैत एक-सँ-बढ़िक'-एक कामिनी आ अंग-सँ-अंग धरि आनंदक आपूर्ति करयवाली दामिनी सबहक अलौकिक आ अनिर्वचनीय लोक मे किसन कन्हैया जकाँ किलोल करैत-करैत अकस्मात् एहि क्षरणशील, निस्सार आ निरानंद संसार मे चित्ते आबि खसल छलाह...। मन दुःखी भ' गेल छलनि हुनक। सभ किछु निरर्थक लागि रहल छलनि। संगहि तामस सेहो लहरि रहल छलनि...।

...निन्न तँ टुटि गेल छलनि, मुदा एखन आँखिक 'मेनगेट' नहि फुजल छलनि। आँखिक मेनगेटक दुनू पल्ला ततेक भारी बुझा रहल छलनि जे तत्काल फोलब कठिन लागि रहल छलनि। निन्न टूटल छलनि खटखट-खटखट केर अवांछित अप्रिय स्वर सँ। आब ओ दशरथ वा अर्जुन वा पृथ्वीराज चौहान तँ छलाह नहि जे पड़ले-पड़ल खटखट-स्वर-उत्पादन-केंद्र पर शब्दभेदी बाण चला सकितथि। खटखट-स्वर-उत्पादन-केंद्र पर कोप वा अफसोस करय लेल ओम्हर ताकब जरूरी छलनि। मुदा, एही मे तँ दिक्कति छलनि। एक तँ ओहिना आँखिक प'ल भारी। दोसर, ई आशंका जे कतहु खटखट-स्वर-उत्पादन-केंद्रक चीफ इंजीनियर कुकुर वा बिलाइ ने होअय। ओ कनेक काल धरि अनुमानैत रहलाह। फेर जोर लगा क' आँखि फोललनि आ ओम्हर तकलनि। ड्रेसिंग टेबुल लग ठाढ़ि सद्यःस्नाता पत्नी शृंगार क' रहल छलथिन। दू बेर अँगैठी-मरोड़ आ चारि बेर चक्षुमर्दन क' प्रिंसिपल साहेब पत्नीक देहक नयन-सर्वेक्षण कयलनि। मास मे पंद्रह दिन उपास कयनिहारि पत्नीक दैहिक भूगोल बड्ड ईमानदार आ यथार्थवादी ढंग सँ अपन इतिहास सँ पिंड छोड़ा क' भविष्य दिस प्रस्थान क' चुकल छलनि। इमारत कहियो बुलंद अवश्य रहल छलै परंच एखन तँ ओ हुनका पुरातात्विक महत्त्वक वस्तु लागि रहल छलनि। खटखट-स्वर-उत्पादन-केंद्रक चीफ इंजीनियरक एहि पुरातात्विक महत्त्व दिस ध्यान जाइते हुनक मोनक उज्जर दपदप रेशमी पर्दा पर रतुका दृश्य सभ झलकि उठलनि। राति मे सूत' सँ पहिने आ सुतलाक बाद जाहि नायिका सबहक ओ गहन वृषभावलोकन कयने रहथि तकरा सभ सँ ओ अपन एहि गतयौवना वास्तविक नायिकाक तुलना करय लगलाह आ एक टा औंट देब'वला आहि आ कुहरा देब'वला काहि हुनक नाक सँ अनचोके बहरा गेलनि...।

तुलनाक क्रम जखन आगाँ बढ़लै तँ हुनका लगलनि जे अखिल विश्व मे सभ सँ बड़का कर्मनेढ़ाचार्य वैह थिकाह...। हुनक भाग्यक सिनॉप्सिस बनयबा काल कदाचित् विधाता कें सुलवाइ जोर क'देने छलनि...। ओहि आपत्काल मे बेचारे की करितथि? एक हाथे ढेका पकड़ने आ दोसर हाथ मे कलम लेने हड़बड़ी मे जे-जे फुरयलनि, से-से घसि देलथिन।

भाग्ये लिखबाक काल नहि, शरीरक रचना करैत काल सेहो कदाच् ओ अगुतायले रहथि। गोल-मटोल धूआ आ ताहि मे अपेक्षाकृत छोट-छोट हाथ। लाख प्रयास करैत रहलाह अछि, परंच ने लम्बाइ बढ़लनि आ ने धोधि पचकलनि। मुखाकृति धरि मांसल आ पनिगर रहनि। रहरहाँ ओ स्नानक बेर अपन देह कें देखि जतय दुखी होइत रहलाह अछि, ओतहि चेहरा पर नजरि जाइते प्रसन्न भ' जाइत छलाह...। युवावस्था मे बेसी स्मार्ट रहथि। तहिया देहो एतेक गोल-मटोल नहि भेल रहनि। एक तँ स्मार्ट दोसर प्रतिभाक संयोग। हुनका पूर्ण विश्वास रहनि जे कोनो दिव्य नायिका हुनक प्रतीक्षा क' रहल छनि। परंच, एक टा खाइत-पीबैत नीक कृषक परिवारक उमाकांत बाबूक भाग्य मे येह अन्नपूर्णा नाम्नी नायिका लिखल छलथिन। शिक्षक पिता आ लुरिगर माताक ज्येष्ठ कन्या अन्नपूर्णा कतोक बर्ख धरि तुसारी पूजनक वरदान स्वरूप अपन एहि आर्यपुत्र कें पाबि जतय अपना कें धन्य अनुभव क' रहल छलीह ओतहि उमाकांतक मोन कनेक छोट भ' गेल छलनि। तथापि ओ अपन स्थिति सँ समझौता करैत मोनक असंतोष कें दबा गेल छलाह। तहिया सँ बहुत साल धरि कहियो दोसर दिस नहि सोचि पौलनि। एल.एस. कॉलेज मे प्राध्यापक रहथि तँ एक दिस कॉलेज मे रेपुटेशन बना क' राखब आ दोसर दिस भोर-साँझ धकाधक ट्यूशन करब। कखन फुर्सति रहनि जे एहि दिस सोचि पबितथि..?

मुदा, आइ? आइ हुनका अपन गोल-मटोल देह ततेक कष्ट नहि द' रहल छलनि जतेक रतुकी लचकैत-फुदकैत अप्सरा सबहक तुलना मे अपन स्वकीयाक आउट आफडेटेड स्थिति। आ से देखि प्रिंसिपल साहेब मनहि मन विधाताक नामे अपन स्मृतिक बैंक मे जमा ओहि एक-सँ-बढ़िक'-एक गारि सबहक बीमित आदेश पठाब' लगलाह जे नेनपने सँ जमा कयने छलाह। मातृभाषाक गारिक एकाउंट खाली भेलाक उपरांत हिंदी-अंग्रेजी सँ पैंच लेलनि। जखन ओहो समाप्त भ'गेलनि तँ एक टा दीर्घ निःश्वास छोड़लनि...!

निःश्वासक स्वर सँ चौंकि क' पत्नी हिनका दिस मुस्किया क' तकलथिन तँ बुझयलनि जेना भोरे-भोर विलाइएक दर्शन भ' रहल छनि। पति कें अनमनायल निर्भाव दृष्टिएँ तकैत देखि अन्नपूर्णा जीक मुँह फुजलनि, "निन्न टुटि गेल? एना मुँह किऐ विधुऔने छी? कखन धरि पड़ल रहब?" मुदा, प्रिंसिपल साहेब खिन्न भेल मुलुर-मुलुर तकैत रहलाह।

"उठू ने! कतेक बेर भ' गेल। टेबुल पर राखल-राखल चाहो पानि भ' गेल। साढ़े सात बाजि रहल छै। आइ ऑफिस जाय लेल तैयार नहि हेबै की?" आब कहू? पत्नीक प्रश्न कोनो कटाह तँ नहि छलनि। परंच, प्रिंसिपल साहेब कें ताहि खन लगलनि जेना ओ कहि रहल होयथिन, "आइ जूता नहि खयबै की?" आब ई अर्थ कोना व्यंजित भेलनि, से ओ अपनो ठेकानि नहि सकलाह। ठेकान करबाक आवश्यकतो नहि बुझयलनि। बस जे अर्थ लागि गेलनि, से लागि गेलनि। आ ओ पसिन्न नहि छलनि। एक तँ खटखट-खटखट क' क' भोरे-भोर उठा देलनि; दोसर ओछाओन छोड़बाक लेल खोंचारि रहल छथि। आर काजे की रहि गेलनि अछि...? मुदा आब कतबो किटकिटयला सँ किछु होअय वला नहि छलनि...। हारि क' ओ उठि गेल छलाह...।

चिंताक नव-नव आयामक आविष्कार

एखन अपन लॉन मे बैसल-बैसल ओ बेर-बेर यैह सोचि रहल छलाह जे तखन ऑफिसो मे तँ यैह बात ध्यान मे आयल छल जे आइ बेकारे कॉलेज अयलहुँ। आइ नहिएँ अबितहुँ तँ की भ' जइतै? कोन एहन उनटन भेल जा रहल छलै? मुदा, एक टा आदति!

ओ अपन सेवाकालक प्रारंभहि सँ नियमित कॉलेज जायवला दुर्लभ प्राणी मे गनल जाइत रहलाह अछि। तें आइ कॉलेज नहि जयबाक मादे ओ सोचियो नहि सकलाह। कोना सोचितथि? भनहि पढ़ाइ-लिखाइ आब कम भ' गेल होनि, परंच कॉलेज आ छात्र सबहक लेल चिंतित रहबाक काज धरि ओ खूबे करैत छलाह...। कहियो प्राध्यापकक रूप मे पर्याप्त यश अर्जित कयने डॉ उमाकांत मिश्रा जहिया एहि कॉलेज मे प्रिंसिपल बनिक' आयल छलाह तहिया हृदय मे एहि कॉलेज आ छात्र सबहक लेल ततेक ने वात्सल्य उमड़ि आयल छलनि जे...। आनक कथा कोन! स्वयं अन्नपूर्णा जीक मानब छलनि जे जँ हुनक प्राणनाथ लड़िकोड़ी रहितथि तँ उमड़ल वात्सल्यक टघार सँ पयरक चट्टी धरि भीजि गेल रहितनि...।

कतोक बर्ख सँ कॉलेज मे बन्न निर्माणक काज कें देखि ओ बड्ड दुखी भ' गेल रहथि। निवर्तमान प्राचार्यक अकर्मण्यता, विजनक अभाव

आ कायरता पर ओ बेर-बेर क्षोभ प्रकट कयने छलाह...। बहुत परिश्रम करय पड़ल रहनि हुनका। विश्वविद्यालय केँ हिला क' राखि देने रहथिन। नियमित दौड़-बरहा, राजनीतिक प्रेशर आ ब्रह्मास्त्रक रूप मे एहि तर्कक प्रयोग जे आकलन क' क' देखि लेल जाय जे विगत दस बर्ख मे विश्वविद्यालयक एहि सर्वप्रमुख कॉलेज मे कतेक राशिक काज भेल छै? फल भेलै जे विश्वविद्यालयक अधिकारी केँ मान' पड़लनि। ओम्हर यू.जी.सी. मे प्रो. मेहरोत्राक दबंग सपोर्ट। धड़ाधड़ फंड आब' लगलै आ होब' लगलै निर्माण-कार्य...!

आब एहि बात केँ छोड़ि देल जाओ जे विरोधी सबहक की कहब छलनि! विरोधी तँ विरोध करय लेल जन्मे लैत अछि। ओ तँ कहबे करतनि जे ई मात्र संयोग नहि भ' सकैत छै जे कॉलेज मे नव-निर्माण आ पुनरुद्धारक काजक समानांतर प्रिंसिपल साहेबक एहि भव्य मकानक निर्माण सेहो होइत रहलनि!

जकरा जे सोचबाक आ बजबाक होइक से सोचअ आ बाजअ। ओ अपने तँ नीक जकाँ जनैत छलाह जे कॉलेज आ विद्यार्थी सबहक लेल ओ दिन-राति कतेक चिंतित रहलाह अछि। एम्हर ओ पेग-दू-पेग सँ बढ़ि बोतल-दू-बोतल धरि मात्र एहि लेल पहुँचि चुकल छलाह जे चिंताक नव-नव आयामक आविष्कार क' सकथि आ ओम्हर लोकसभ...! लोकसभक की छिऐ? संगे मे मुँह छै जे मन होइत छै, से बजैत अछि। ताहि सँ की ओ डेग पाछाँ हटा लेताह? एहन डेरबूक ओ कहियो नहि रहलाह। जहिया बैचक बैच ट्यूशन करैत रहथि तहियो लोक सभ बड्ड हल्ला करैत छलनि। कहियो किछु टेढ़ भेलनि हुनकर? आ आब दौड़-बरहा करैत छथि ओ, एहि शहर सँ ल'क' पटना-दिल्ली एक कयने छथि ओ, अधिकारी सभ केँ प्रसन्न करैत रहबाक लेल पिअ'-पिआब' वला क्षेत्रक महारथी बनि चुकल छथि ओ, तँ सफल के हैत? यदि ओ सफल भेल जा रहल छथि तँ ककरो किऐ फाटि रहल छै? अध्ययन-अध्यापनक क्षेत्र मे सक्रियता कम भ' गेलाक बाद कृष्णपक्षक इजोरिया जकाँ घटैत जा रहल हुनक ख्याति यदि आब एहि तरहेँ सक्रिय भेलाक बाद शुक्लपक्षक इजोरिया जकाँ टहटहा उठलनि तँ पता नहि एहि सँ लोक सभक पेट मे पानि किऐ हड़हड़ा रहल छै!

सत्य पूछी तँ प्रिंसिपल साहेब जे किछु क' रहल छलाह से कॉलेजे के खातिर ने...! भोरे जे कॉलेज जाइत छलाह से प्रायः दस-एगारह बजे राति धरि घुरि क' अबैत छलाह। ई आदति नहि रहितनि... ओहो आन-आन प्रिंसिपल जकाँ समय पर कॉलेज जाक' समय पर घर घुरि अबितथि तँ आइ... एहन मानसिक कष्ट नहि ने भोगय पड़ितनि। मुदा...!

मुदा की? जे होयबाक रहैत छै, से भइए टा जाइत छै। ओतेक आग्रह सँ बजौने छलथिन बेटा-पुतोहु बैंगलोर। एक तँ बेटाक प्रमोशनक खुशी; दोसर पोताक जन्मदिन। बहुत आग्रह कयने छलनि जे दुनू गोटे आबि जाउ। मुदा, ओ नहि जा सकलाह। अन्नपूर्णाजी छटपटा क' रहि गेल छलथिन। यदि चलि गेल रहितथि तँ आइ...! ओत' नहि जा सकलाह तँ कोनो बात नहि, कम-सँ-कम काल्हि कॉलेज नहि गेल रहितथि...। काल्हि गेबो कयलाह तँ कोनो बात नहि, आइ नहि गेल रहितथि...। मुदा...! प्रिंसिपल साहेब बहुत तेजी सँ सोचि रहल छलाह... भोर मे निन्न टुटलाक बाद कोना की भेल छलै...!

प्रमाण छुटि जयबाक भय

स्नान करैत काल जखन चानि पर पानि पड़ल छलनि तँ खुमारी टूट' लागल छलनि। संगहि एक टा भय करेज मे व्याप्त होइत अनुभव भेल छलनि। शहरक कोनो कोण मे धड़फाड़ाक' 'लघु सिंचाई योजना' केँ क्रियान्वित करैत जेना कोनो व्यक्ति केँ ई सोचि क' भय होअय लगैत छै जे योजनाक रुख आ परिणाम ककरो घरक मुँह दिस तँ नहि जा रहल छै तहिना तखन प्रिंसिपल साहेब सशंकित भ' उठल छलाह। चोरी क' क' पलायन क' गेल कोनो चोर केँ जेना बाद मे ई सोचि क' करेज दलकैत अनुभव होइत छै जे सेन्ह पर तँ ने कोनो प्रमाण छुटि गेल तहिना प्रिंसिपल साहेबक करेज दलक' लागल छलनि। नितांत कामार्त्त भ' दुर्बल क्षण मे युगनद्ध भेलि कोनो अविवाहित युवति केँ जेना अवांछित गर्भ रहि जयबाक संभावना सँ पल-पल अदंक लैत रहैत छै तहिना स्नानक बेर मे प्रिंसिपल साहेब केँ एक टा विचित्र अदंक अपन संपूर्ण व्यक्तित्व मे सन्हिया गेल अनुभव भ' रहल छलनि...।

जलखै करैत काल एक टा आर संदेह हुनका सिहरा देने छलनि। राति नशा मे कतहुं किछु मुँह सँ बहरा तँ नहि गेल छलनि? दोहरी आशंका सँ ओ विचलित भ' उठल छलाह...।

फुर्ती सँ जलखैयक वस्तु आनि-आनि क' उत्साहपूर्वक परसैत पत्नीक निर्विकार चेहरा पर सोझे तकबाक साहस नहि जुटा पाबि रहल छलाह ओ। कखनो खिड़की सँ बाहर आ कखनो देबाल घड़ी दिस नजरि फेंकैत ओ अपन शंका केँ पुष्ट करबाक उद्देश्यैँ पत्नीक निश्छल चेहरा पर प्रमाण तकबाक प्रयास क' रहल छलाह। ओ ई सोचि क' बेचैनीक अनुभव क' रहल छलाह जे समर्थ-सकर्थ बेटा-पुतोहु आ बेटी-जमायक भाग्यवती प्रौढ़ा मम्मीजी केँ जँ अपन प्रौढ़ आर्यपुत्रक गत रातुक लीलाक मादे किछु पता चलि जानि तँ परिणाम स्वरूप की-की भ' सकैत अछि...!

एम्हर आबि क' भले प्रिंसिपल साहेब अध्ययन-अध्यापनक निरर्थक कर्म छोड़ि देने होथि, मुदा कहियो तँ आखिर जोड़-घटाव-गुणा-भाग केँ नीक जकाँ धुनने छलाह, कतोक लोक केँ अपना निर्देशन मे पीएच.डी. करवा चुकल छलाह। तेँ पोल फुजलाक बाद गृहक्षेत्रे बन' वला संभावित समीकरणक स्वरूप द' सोचि-सोचि क' हुनक हालति गुरुजीक हाथ मे खजूरक छौंकी देखि क' कँपैत चटिया वला भ' रहल छलनि। हुनका लागि रहल छलनि जे एहि समीकरण मे निश्चित रूप सँ एक दिस ओ स्वयं रहताह रक्षात्मक मुद्रा मे आ दोसर दिस सभ संतानक संग श्रीमती रहथिन आक्रामक मुद्रा मे...। तेँ आइ एहि सँ पहिने जे पत्नी केँ कनेको संदेह होउन ओ शीघ्र डेरा छोड़ि देब' चाहैत छलाह...।

जल्दी-जल्दी प्रिंसिपल साहेब जलखै समाप्त कयलनि आ कपड़ा पहिरि गैरेज सँ गाड़ी बहार करबाक लेल विदा भ' गेलाह। दिग्घीक पछवारी-उत्तरवारी कोण लग पुरना बस स्टैण्ड सँ वामा मुड़ैत पुअर होमक मुख्यद्वार धरि पहुँचैत-पहुँचैत हुनका लगलनि जेना केओ बीच सड़क पर ठाढ़ भ' रुकबाक लेल हाथ देखा रहल अछि। हे भगवान! हिनको आइए दर्शन देबाक छलनि! आइ अहीं बचा सकैत छी। नहि तँ...! जिनक नामे सुनि क' एहि शहरक लोक सभक करेज हड़हड़-हड़हड़ करय लगैत छै सैह वृंदावन बाबू साक्षात् दुनू हाथ उठौने गाड़ी रोकबाक संकेत क' रहल छलथिन...।

बीसम शताब्दीक एहि अंतिम चरणहुँ मे अयाची, गंगेश, पक्षधर आ मण्डनक माला जपैत काल्पनिक मिथिला राज्यक एहि औंघायल-भंगिआयल राजधानी मे रहनिहार तथाकथित बुद्धिजीवी लोकनिक मध्य वृंदावन बाबू चर्चित व्यक्ति छथि। ओ कैमेस्ट्रीक प्रोफेसर छलाह आ ओही कॉलेजक प्राचार्यक रूप मे सेवानिवृत्त भेल छलाह जाहि मे एखन उमाकांत बाबू प्रिंसिपल छलाह। लोक सभक कहब छलै जे जँ संसार भरि मे 'मिस्टर कंजूस' बनबाक कोनो प्रतियोगिता होइतै तँ वृंदावन बाबू निर्विवाद चैम्पियन घोषित होइतथि—एहि मे कोनहु संदेह नहि...।

मध्यम धूआ, कारी भुजंग रंग, चौड़गर मांसल मुखाकृति, उज्जर दप-दप केस ऊपर मुँहें सोंटल... क्लीन शैब्ड चेहरा पर तूर सन उज्जर भउँहक नीचाँ शीशाक गोली जकाँ चमकैत आँखि... दुनू कानक कोर पर लपलपाइत उज्जर केसक लौ... नील टीनोपालक दर्शन लेल तरसैत मैलछौंह कुर्त्ता-धोती—यैह छलाह आदर्श महाविद्यालयक भूतपूर्व प्राचार्य डॉ. वृंदावन आचार्य...।

पहिने पैंट-शर्ट वा सूट सेहो पहिरैत रहथि। मुदा, देखि क' लगैत छलनि जे ई पैंट-शर्ट वा सूट वैह छियनि से कहियो सासुर सँ जराउड़ मे भेटल रहनि। रिटायर्ड भ' गेलाक बाद अंग्रेजिया ड्रेस प्राय: नहिए पहिरैत छलाह...। हँ कहियो काल प्रैक्टिस करबाक हेतु कोर्ट जाइत छलाह तँ वकील वला ड्रेस लगा लैत छलाह। ओहू ड्रेस द' सुन' मे अबैत छलै जे कोनो वकील सँ अधिया दाम मे किनने छलाह।

ओना हुनका कोनो कमी नहि छलनि। शहरक क्रीम साइट पर तीन कट्ठा जमीन। ताहि मे एक दिस दुमहला मकान। दोसर दिस चारि-पाँच टा फ्लैट जे भाड़ा पर लागल। बीच मे बाड़ी-झाड़ी। गामो मे पर्याप्त चास-बासक भूमि...। श्रीमंत कुल-खूटक लोक। मुदा...!

एहि 'मुदा' केँ लोक सभ बड्ड तीरैत छल। हुनक कृपणत्व, धोंछत्व आ मर्कटत्वक मादे कतेक खिस्सा सभ पसारि देने छल। लोक सभक कहब छलै जे जकरा एतेक संपत्ति रहतै, प्रतिष्ठा वला नोकरी रहतै से किएक गाय पोसत? पोसबो करत तँ अपनहि किऐ दूहत? दुहबो करत तँ अपनहि हाथे चिपड़ी किएक पाथत...?

कहाँदन छोटका जमाय एक राति थप-थप केर आवाज सुनि जागि गेल छलथिन। शंका भेलनि जे कहीं चोर तँ ने सेन्ह काटि रहल अछि। ओ चुपचाप टार्च ल'क' पहिने पत्नी केँ देखल़नि। शेफाली निसभेर निन्न मे सूतल छलथिन। ममत्व मे श्रीकांत बाबू सोचलनि जे बेचारी केँ किऐ जगबियौ। चुप्पेचापे पलंग सँ उतर' लगलाह। उद्देश्य छलनि जे आखिर देखी तँ जे चोरे अछि वा आन किछु। परंच, जहिना ओ पलंग सँ उतर' लगलाह कि पत्नी भरि पाँज क' ध' लेलथिन, "कत' जा रहल छी, हमरा छोड़ि क'?"

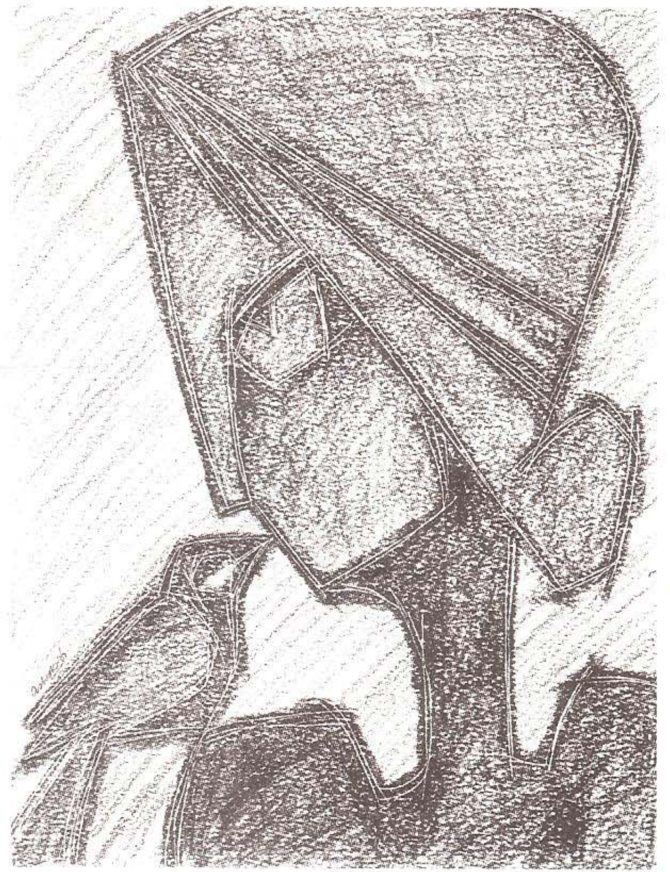
"सुनै छिऐ थपथप के आवाज? की भ' सकैए? कनेक देख' चाहैत छिऐ?"

"छोड़ू! ओहिना किछु हेतै।"

श्रीकांत बाबू केँ शेफालीक ई बात विस्मयजनक लगलनि। आब तमाशा लागल। ओ बाहर जाय लेल जोर लगबैत रहलाह। ओम्हर शेफाली किन्नहु जाय देब' लेल तैयार नहि। भारी झिक्का-तोरी होअय लागल...। आखिर आजिज भ'क' शेफाली कहलथिन,

"चलू! बड्ड उसबिस्सी लेने अछि तँ चलू। देखि लिय' अपना आँखिए।"

तमतमायलि शेफाली ओहि भोरहरिया मे पतिक डेन पकड़ने घर सँ बाहर भेलीह... बरंडा पर अयलीह... आ कोण पर रेलिंग लग ल' जाक' ठाढ़ क' देलनि पति केँ...। तकर बाद हुनका किछु कहबाक जरूरतियो नहि रहलनि...। भोरहरियाक ओहि झलफल अन्हार मे श्रीकांत बाबू विस्मय विस्फारित आँखि सँ देखि रहल छलाह... वृंदावन बाबू मनोयोगपूर्वक चिपड़ी पाथ' मे लागल छलाह...। भारी छगुन्ता मे पड़ि गेल छलाह श्रीकांत बाबू! ओना अपन ससुरक शंकालु स्वभाव सँ ओ परिचित छलाह। परिचित की छलाह भोगने छलाह। एक दिन वृंदावन बाबू हुनका मात्र एहि लेल हूथि देने छलथिन जे ओ अपन सारि सँ एकांत मे हँसि-हँसि क' किएक बतिया रहल छलाह। मुदा, अजुका दृश्य देखि ओ सन्न रहि गेल छलाह...। चुपचाप घुरि आयल रहथि घर मे। बाद मे पता नहि कोना ई बात लीक भ' गेल रहै आ सौंसे शहर मे पसरैत गेल रहै।



वृंदावन बाबूक मादे अधिकांश लोकक मोन मे ई धारणा बसल छलै जे ओ भारी अलच्छ छथि। जकरा ओ दर्शन देलथिन तकरा बूझू जे एक चरण लेलथिन। दर्शन कि हुनक स्मरण-मात्र भारी खतराक बात मानल जाइत छल। आ नाम? हरे-हरे! जँ नाम लेलहुँ कि बूझू जे गेलहुँ...। कहाँदन एक बेर कॉलेज जाय लेल ड्राइंगरूम मे कपड़ा पहिरैत रहथि कि पत्नी लग मे आबि कहलथिन, "सुनै छी, कनेक दोसर रूम मे जाक' कपड़ा पहिरू ग'।"

"किएक? एत' की हर्ज छै?"

"हर्ज तँ नहि छै कोनो। तखन बौआ परीक्षा देब' लेल बहरयताह ने। तेँ कहि रहल छी। कनेक एत' सँ हटि जइतियैक!"

ईहो बात पता नहि कोना शहर भरि मे पसरि गेल रहै। भ' सकैए ई सभ कथा काल्पनिक होइक। प्राय: एहन मामिला मे होइतो छै। परंच, एहि सभ सँ वृंदावन बाबूक एक टा खास छवि बनि गेल छलनि...। प्राय: लोक सभ हुनका सँ कतराइत रहैत छल...।

सैह वृंदावन बाबू हाथ उठौने गाड़ी रोकबाक संकेत क' रहल छलथिन। नहिजो चाहैत प्रिंसिपल साहेब केँ गाड़ी रोक' पड़लनि...।

"हेँ... हेँ... हेँ... हेँ... की यौ प्रिंसिपल साहेब, कॉलेज जा रहल छी?" मोन तँ भेलनि जे कहि दियनि, "नहि, सासुर जा रहल छी।" परंच, से कहब मोश्किल। मनक भीतर चाहे जे चलैत रहल होउन, सोझा मे एना नहि ने कहल जा सकैत छलै?

"जी! अपने कत' सँ आबि रहल छिऐ?"

"कनेक टीसन गेल छलहुँ। फेर कनेक टाबर जयबाक अछि। हेँ... हेँ... सोचलहुँ जे रिक्शा कथी लेल करू? पयरेँ टहलैत चलि जायब। जे कि ने से स्वास्थ्यक हेतु टहलब बड्ड जरूरी छइ किने? हेँ... हेँ... हेँ...।"

"आह, ताहि मे कोन शंका।" प्रिंसिपल साहेब कारक गेट खोलि देलथिन। एक टा जबरदस्त 'हेँ... हेँ' केर संग वृंदावन बाबू कार मे आबि विराजमान भेलथिन।

एम्हर प्रिंसिपल साहेब सोचि रहल छलाह...। एहन भारी कंजूस नहि देखल...। रिक्शा मे पाइ खर्च करबाक बेर स्वास्थ्य मोन पड़ैत छनि। मँगनीक कारक सवारी देखि स्वास्थ्यक चिंता बिला जाइत छनि...। स्वाइत...!

गाड़ी क्रमश: मिर्जापुर चौक पार करैत... पूनम टॉकीज केँ पाछाँ छोड़ैत... पानी टंकी लग आबि क' रुकल... आ वृंदावन बाबू गाड़ी सँ हेठ होइत उचिती कयलथिन,

"बस! तँ हम चलैत छी। भगवान अहाँक कल्याण करथु।"

"खूब कल्याण करताह भगवान कि! अहाँ सन प्राणीक दर्शन जे भ' गेल अछि।" मनहि मन किटकिटाइत प्रिंसिपल साहेब गाड़ी सहित आगाँ बढ़ि गेलाह।

सेरा गेल ज्वालामुखी

आइ एखने अपन मकानक लॉन मे बैसल-बैसल समक्ष मे पसरल डायरीक दुनू खाली पृष्ठ कें निहारैत प्रिंसिपल साहेब सोचि रहल छलाह... व्हाट इज एलॉटेड कैन नॉट बी ब्लॉटेड...!

उमाकांत कें, नवयुवग उमाकांत कें, जननिहार मित्र लोकनि सपनहुँ मे विश्वास नहि क' पौताह जे ओ आब 'लिखलाहा' पर विश्वास करय लगलाह अछि। ओ सभ भारी छगुन्ता मे पड़ि जयताह जे ई वैह उमाकांत अछि जे सातम दशक मे सैंतालिसक आजादी कें फुसियाहा आजादी मानैत छल, जे जनताक स्वप्नभंगक लेल उत्तरदायी दोगला राजनीति कें राति-दिन गरियबैत मार्क्स, लेलिन आ माओ सँ दिशा-निर्देश चाहैत रहैत छल...? आखिर कोन कारण छलै जे उमाकांतक भीतर सुनगैत ज्वालामुखी एना सेरा गेलै! जे आदमी एक्को क्षण लेल समझौता आ मध्यमार्ग पर सोचबाक लेल तैयार नहि छल... से एना?

असल मे भेल ई रहै जे जहिया कम्युनिस्ट पार्टी चीनी आक्रमणक मुद्दा पर बँटि गेल छलै तहिया उमाकांतक मन फाटि गेल रहनि...। फेर नक्सलवादी आंदोलनक लहरि मे कनेक आसक किरण देखाइ पड़ल रहनि...। मुदा ओकरहु विचित्र चरित्र देखि विरक्ति भ' गेलनि...। हुनका मोन छनि जे कतोक रास बिहारी सभ कलकत्ता मे नक्सलाइटक हाथें मारल गेल वा नहि तँ भगा देल गेल...। ई कोन क्रांतिकारिता भेलै? छि:!

एकर बादे ओ सभ तरहक क्रांतिकारिता कें नमस्कार क' लेलनि...। आदर्शक लंगौटी पहिरि विपरीत धारा मे हेलैत रहब आ सभ तरहक प्रगतिक अवसर सँ चूकैत रहब—ई तँ साफे बुड़ित्व थिक। सबहक तरीभिट्ठी जानि चुकल रहथि ओ। ऊपर सँ 'इंकलाब जिंदाबाद' करयवला दुमुँहा सभ अवसर पौला पर सोझे धृतराष्ट्र बनि जाइत अछि। जहिया विशेष स्कॉलरशिप पर मास्को वा बीजिंग जाय लेल कोनो प्रतिभाशाली कैडर छात्रक चयन करबाक अवसर अबैत छै तँ धृतराष्ट्र कॉमरेड सभ कें अपन दुर्योधनक नाम प्रस्तावित करय मे एक्को रत्ती लाज नहि होइत छनि...। एक-एक राजनीतिक पार्टीक चरित्र पर विचार क' चुकलाक बाद उमाकांत दुखी भ' गेल छलाह आ एहने मन:स्थिति मे निर्णय लेने छलाह—सभ घर देखा एक्काहि लेखा। कतहु नैतिकता वा इमानदारी नहि। जखन सबहक यैह हाल छै तखन फालतू हमही किऐ हलाल होइत रहू? उमाकांत बाबू! सभ सँ पैघ पाइ थिकै! बस। पाइ कमाउ। आ से जतेक संभव होअय, जेना संभव होअय! ततेक कमाउ आ तेना कमाउ! श्री माने लक्ष्मी। लक्ष्मी रहत तँ अहाँ श्रीमान्। नहि तँ त्यागी रहियो क' नादान!!

से प्रिंसिपल साहेब खूब कमयलनि। पाइ तँ हुनका कमाइए के छलनि। ई तँ हुनका हाथे मे लिखल छलनि। अचानक हुनक हृदय धक् सँ रहि गेलनि। मोन पड़लनि...जखन क्रांतिकारिताक भूत उतरल रहनि आ सनातन धर्मक पुनरुत्थान होअय लागल रहनि हुनका भीतर तखन अपन परंपराक प्रति विचित्र आकर्षणक अनुभव भेल रहनि। नीक-बेजाय जतेक परंपरा रहैक सभ मे जेना एक टा नव चमक देखाइ पड़' लागल रहनि...।

एहने समय मे मोन भेल रहनि जे कनेक अप्पन भविष्यक अंदाज ली। हाथ देखयबाक क्रम मे ई जानि हृदय मे गुदगुदी होअय लागल रहनि जे हुनक हाथ मे भाग्य-रेखा तँ गस्साफाड़ छनि। पहुँचा सँ ल'क' मध्यमा आँगुरक मूल मे शनि पर्वत धरि...। शनि पर्वत पर आबि क' तँ सोझे त्रिशूलाकृति बनल छै ओकर। सूर्य रेखा नमहर आ गहिरगर छन्हिएँ। मस्तिष्क रेखा एकदम शार्प। की हेतै जे हृदय रेखा कनेक दबल छनि? तरहत्थीक त्वचा मांसल आ गुजगुज कोमल... आँगुर नोकगर... ई एक टा ऐश्वर्यवान लोकक हाथ थिक... बस कनेक...! एत' आबि क' हस्तरेखा विशेषज्ञ पं. नरेंद्र पाठक थकमका गेल रहथि...! बड्ड खोंचारने रहथिन उमाकांत बाबू तँ ओ हुनक हाथ महक शुक्र पर्वत कें अपन हाथक औंठा सँ दबबैत कहने रहथिन।

''देखू, उमाकांत बाबू। हमर सभक काज बड्ड कठिन अछि। किछु एहनो बात पता रहैत अछि जे बाजब ठीक नहि होइत छै। अपने जोर द' रहल छी तँ कहिए दैत छी। अपने कामिनी सँ बँचबाक प्रयास करब।''

''कनेक खोलि क' कहल जाओ।''

''खुजले खुजल अछि।'' पं. नरेन्द्र पाठक अपन तर्जनी सँ हुनक दहिन तरहत्थी मे शुक्र पर्वत दिस संकेत करैत कहलथिन, '' एक तँ अपनेक हाथ बहुत कोमल अछि। एहन गुजगुज कोमल तरहत्थीवला बड्ड कामुक होइत अछि। दोसर, देखै छिऐ शुक्र पर्वत पर कारी तिल? ई सेक्सक कारणेँ कलंकित होयबाक खतरा दिस संकेत क' रहल अछि। तेँ सावधान...।''

''धुत्! अरे, पंडीजी हम विवाहित छी। हमरा की खतरा होयत एहि सभ सँ?''

''भगवान करथि जे नहि होअय।'' कहि पंडित जी प्रसंग समाप्त क' देने रहथिन...।

आइ प्रिंसिपल साहेब अपन विस्मय-विस्फारित नेत्र सँ शुक्र पर्वत पर चमकैत ओहि कारी तिल कें देखि रहल छलाह जकरा ओ पं. नरेन्द्र पाठकक ब्रह्मवाक्यक अनुसार समस्याक जड़ि मानि रहल छलाह। ठीके लिखलाहा हाथ ध' क' करा दैत छै...। ओ आँखि गड़ा क' तिल कें देखि रहल छलाह...। तिल लहर' लागल रहनि...। नहू-नहू तिलक आकृति पैघ... आर पैघ भेल जा रहल छलै...। पैघ... आर पैघ...। आ वृहदाकार कारी तिलक पृष्ठभूमि सँ एक टा नारीक सम्मोहक मुखमंडल झलक' लागल छलै... ओ चिन्हबाक प्रयास क' रहल छलाह... आकृति क्रमश: आओर स्पष्ट भेल जा रहल छलै... ओह! मुदा, की एहि सँ बाँचल नहि जा सकैत छलै? जरूर बाँचल जा सकैत छलै...। परंच अधिक बुद्धिए व्याधि भ' जाइत छै। बेसी काबिल लोक तीन ठाम मखैत अछि...। बँचबाक रस्ता तँ पत्नीए देखा देने छलीह... मुदा बुद्धिए मारल गेल छल तँ...।

कारक तत्त्वक खोज मे टोइया

कहियो गणित कें दर्शनशास्त्रक समकक्ष विषय माननिहार, तर्क सँ जे साबित नहि होअय तकर थुरीं उड़ा देनिहार, धर्म कें अफीमो सँ बेसी खतरनाक साबित कयनिहार वैज्ञानिक सोचवला। प्रिंसिपल साहेब अपन वर्तमान ओझराहटिक लेल कारक तत्त्वक खोज मे टोइया दैत-दैत... आखिर ओहि ठाम पहुँचि गेलाह...। आइ सँ प्राय: डेढ़ मास पहिलुक ओ प्रसंग जेना-जेना हुनका मोन पड़ैत जा रहल छलनि तेना-तेना अपन बुड़ित्व पर तामस आ पश्चाताप एक संगे भ' रहल छलनि...।

ओहि दिन ओ कुलपतिक उपेक्षाक शिकार भ'क' डेरा घुरल रहथि। पत्नी नहि छलथिन। संभवत: मंदिर गेल छलथिन। ओ रहरहाँ एहिना साँझ क' मंदिर चलि जाइत छलथिन। इच्छा तँ पति कें संग ल' क' जयबाक रहैत छलनि, मुदा पति कें एतेक फुर्सति कहाँ? ओ तँ कॉलेज आ विद्यार्थी सभक लेल प्राय: सांध्यकालीन चिंता मे लीन कॉलेज सँ पहर राति बितला पर आपस होइत छलथिन। तेँ प्राय: एकसरिए श्यामा माइक दर्शन करय चलि जाइत छलीह...।

प्रिंसिपल साहेब हाथ-पयर धोक' जखन सुभ्यस्त भेलाह तँ चाहक तलब बुझयलनि। नोकर कें चाह बनाक' अनबाक लेल कहि कुलपतिक अजुका व्यवहार पर सोचय लगलाह...।

कॉलेज मे कुलपतिक पी.ए.क फोन आयल छलनि। बजाहटिक रहस्य द' जनबाक लेल पी.ए. कें कतबो टोने छलाह... किछु थाह नहि लागल छलनि...।

विश्वविद्यालयक कैम्पस मे 'ड्रीम पैलेस' सँ सटल कुलपति आवासक अतिथि कक्ष मे सेहो बैसल-बैसल ओ प्राय: एही प्रसंग पर सोचि रहल छलाह...। अतिथि कक्ष मे बहुत रास लोक

जमा छलै। सभ मुलाकाती...। कुलपति विश्वविद्यालय सँ प्राय: दुइये बजे दिन मे आबि गेल छलथिन। ठीक तीन बजे विश्वविद्यालय पहुँचलाक बादो प्रिंसिपल साहेब केँ भेंट नहि भ' सकल छलनि...। आब की कयल जाय? कॉलेज वा डेरा घुरि क' जाथि आ पुन: कुलपति आवास जाथि—ई कोनो तरहें उपयुक्त नहि बुझा रहल छलनि...। किछु काल रजिस्ट्रार आ परीक्षा नियंत्रक सँ भेंट करैत थाह लेबाक प्रयास कयलनि...। किछु थाह नहि लगलनि। अगत्या तीन सवा तीन बजे कुलपति आवास पहुँचि गेलाह। मुदा एत' तँ 'व्यवस्था मे छेद है, रुकावट के लिए खेद है' वला जाम लागल छलै...। सड़क आ कैम्पस मे रंग-विरंगक गाड़ी लागल। तहिना रंग-विरंगक लोक अतिथि-कक्ष मे जमा...।

...पी.ए. आ चपरासीक माध्यम सँ एक-एक क' पुर्जी भीतर जाइत रहलै आ मुलाकाती सबहक बजाहटि होइत रहलै...। ओहो अपन कार्ड पठा देने छलथिन मुदा एखन धरि बजाहटि नहि भेल छलनि। एहि बीच कतोक लोक भीतर मे गेल आ भेंट क' आपसो भ' गेल। ओ प्रतीक्षा मे बैसले रहलाह। ओ सोचि रहल छलाह... पता नहि हमर नम्बर कखन आओत? आखिर हमरा एतेक लटकाओल किएक जा रहल अछि? कोनो अपने तँ नहि आयल छियनि। बजौने छथि। तखन? एतेक तँ हुनको नीक जकाँ जानल-बूझल छलनि जे कुलपति केहन सामंती मानसिकताक छथि! दूर धरि राजनीतिक पहुँच सेहो छनि। नहि तँ वी.सी. कोना बनि गेलाह? दरबार लगयबाक आदति छनि। परिवार एहि ठाम छनि नहि। पटना मे छनि। सांध्यकालीन संध्यावंदनक प्रेमी लोक। नित्यहु भेनाइ अनिवार्य। आ ओहि मे लीलावती ललना लोकनिक उपस्थिति अवश्य होयबाक चाही। तकर अभाव सेहो नहि छलनि। एहि शहरक शिक्षाजगत मे अग्रधावनोत्सुका ललना लोकनिक कोन अभाव? एक-सँ-बढ़िक'-एक। एकर अनुभव प्रिंसिपल साहेब केँ अपनहु कम नहि छलनि। अल्कोहलमय रंगीन साँझक शौकीन कुलपति महोदय केँ प्रायोजकक कमी नहि छलनि। परंच, आदर्श महाविद्यालयक प्रिंसिपल भइयो क' ओ एखन धरि एक्को टा रंगीन साँझक विधकरी बनि देखौने नहि छलथिन। भ' सकैए एही लेल क्षुब्ध होयथिन...। मुदा, एतेक साधारण बात लेल एना लटकायब...। कोनादन लागि रहल छलनि...। अपमानक अनुभव भ' रहल छलनि...। हम कोनो हड़ही-सुड़ही कॉलेजक प्रिंसिपल छी? विश्वविद्यालयक सभ सँ पैघ कॉलेजक प्रिंसिपल छी हम... तखन...?

आशंका, तामस... अपमान... उपेक्षा आदिक जंगल मे बौआइत-बौआइत ओ तखन चौंकि उठल रहथि जखन चपरासी आबि घोषणा कयने रहय जे आब कुलपति किनको सँ भेंट नहि करताह... घोषणा क' ओ पुन: भीतर चलि गेल। लोक सभ नहू-नहू ससरैत चलि गेल, मुदा ओ सन्न भेल कनेक काल बैसल रहलाह...। पुन: साहस क' पी.ए. सँ अनुरोध कयलथिन... ओ इन्टरकॉम पर किछु बतिआयल... फेर हिनका भीतर जयबाक संकेत कयलक...। 'मे आइ कम इन' कहैत ओ भीतर कमरा मे जहिना पयर देलनि कि चौंकि गेलाह...।

उज्जर दपदप खादीक धोती-कुर्त्ता मे सुसज्जित कुलपति कुर्सी छोड़ि क' ठाढ़ भेल पाइप पीबि रहल छलाह... सामने मे उषा जी सेहो ठाढ़ छलीह...। टेबुल पर राखल टू टा खास प्रकारक नक्काशीवला खाली गिलास अपन कथा अपनहि कहि रहल छल...। गंभीर कुलपति धुआँ उड़बैत रहलाह... ने अपने बैसलाह ने हुनका बैस' लेल कहलथिन। सोझे टारि देलथिन, ''प्रिंसिपल साहेब, अभी आप जाएँ। पटने से लौटकर आता हूँ। फिर आपको देखूँगा... फिलहाल इतना ध्यान रखें, मिल-जुलकर रहना अच्छा होता है। उषा जी अब आप भी जाइए और जितना कहा है उस पर ध्यान रखिए...।'' एहि सँ ने एक शब्द बेसी ने एक शब्द कम। तखनहि हुनका अवबोध भेलनि जे उषा जीक मुँह सेहो लटकल छनि...। आब इज्जति एही मे छलनि जे चुपचाप बाहर भ' जाथि...।

...बाहर आबि ओ उषा जी केँ अपनहि कार मे बैसा नेने रहथिन...। उषा जी केँ देखि हुनका ओहिना कीदन-कीदन होअय लगैत छनि। आ एखन तँ ओ उदास छलीह। ओ हुनक लटकल मुँह नहि देखि सकैत छलाह। तत्काल अपन उपेक्षा आ अपमान बिसरा गेल छलनि। की बात छैक? एना किऐ विधुआयल छथि? पूछला पर उषा जी ठहक्का दैत हँस' लागल छलीह...। एक क्षण मे मुद्रा बदलि गेल छलनि उषा जीक, ''की कहू सर! एहि शहर मे चूतिया सभक कमी नहि अछि। उषा एतेक फरहर किऐ अछि? बाज' लगैत अछि तँ बड़का-बड़काक पाद किऐ सटका दैत अछि? पटना सँ ल' क' दिल्ली धरिक नेता सभ सँ एकर कॉन्टेक्ट किऐ छै? की कहू? कतेक कहू? एहि शहर मे कतेक लोक केँ उषा सँ कतेक तरहक कष्ट छै। ओही सभ मे सँ केओ कुलपति लग हमरा बारे मे कंप्लेन क' देने छल। ओही संदर्भ मे बजौने छलाह। मुदा, अहाँ तँ जनिते छी जे उषा डेरायवाली नहि।''

''आखिर बात की छलै?''

''छोड़ू! लिय' पान खाउ।'' उषा जी पानक शौकीन छलीह। पनबट्टीद पर्स मे रखैत छलीह। ओ एक टा पान जबरदस्ती प्रिंसिपल साहेबक मुँह मे ठूसि देलथिन। एक टा अपनो खयलीह। पंजुम जर्दा आ बाबा पत्तीक योग द' उत्साहपूर्वक सुनाबय लगलथिन जे कोना ओ कुलपति केँ मूर्ख बनाक' आबि रहल छथि। की भेलै जे ओहि बकलोल केँ बहटारय लेल टू पैग पीब' पड़लनि।

पैगक प्रभाव उषा जी पर प्रिंसिपल साहेब केँ स्पष्ट देखाइ पड़ि रहल छलनि। कुलपति केँ मूर्ख बनयबाक कथा सुनबैत-सुनबैत ओ खुशी मे एक टा जबरदस्त हाथ प्रिंसिपल साहेबक जाँघ पर मारलथिन आ हँसैत-हँसैत हुनका कोरा मे ओंघरा गेलीह।

''उषा जी, हम सभ बाट पर छी आ हम ड्राइव क' रहल छी।''

''ओहो! डर भ' रहल अछि की?'' प्रिंसिपल साहेब किछु नहि बजलाह। अचानक गाड़ी रोकि देलथिन।

''गाड़ी किऐ रोकि देल?''

''अहाँक ठेकाना आबि गेल।'' उषा जी केँ आब ध्यान अयलनि। महिला कॉलेजक मेनगेट लग गाड़ी ठाढ छलै।

''आइ अपन कॉलेज नहि ल' चलब?''

''आइ नहि। आइ आब सोझे घर जायब उषा जी। थाकि गेल छी। आब अहूँ अपन क्वार्टर जाउ।''

प्रिंसिपल साहेबक अनमनायल स्वर सुनि उषा जी बुझि गेलीह जे आइ आब साँझ क्वार्टर पर काट' पड़त। निश्चित रूप सँ ई कठिन कार्य थिक। परंच, कयल की जाय? ओ चुपचाप गाड़ी सँ उतरि कैम्पस मे प्रविष्ट भ' गेलीह। प्रिंसिपल साहेब गाड़ी आगाँ बढ़ौलनि...।

उषा जी केँ छोड़बाक एक्को रत्ती इच्छा प्रिंसिपल साहेब केँ नहि भ' रहल छलनि। ओ हुनक उर्जाक स्रोत... प्रेरणाक स्रोत छलथिन।

की पर्सनैलिटी छलनि उषा जीक! पाँच फीट पाँच इंचक सोंटल-सॉटल धुआ—सोझ तनल! अंडाकार मुखाकृति पर उन्नत नासिका...! डोका सनक पैघ-पैघ आँखि...! पातर ठोर... भरल गाल... दुधिया गोराइ... भौंए सन कारी केस...!

पटना यूनिवर्सिटीक प्रॉडक्ट एहि स्मार्ट स्त्रीक तांबूलरंजित पातर ठोर सँ जखन धाराप्रवाह अंग्रेजी झरय लगैत छलै तखन प्राय: सामनेवला एहि बात पर पछताय लगैत छल जे कोन पाप लागल जे एहि स्त्री लग अंग्रेजी मे बजबाक गलती कयलहुँ। पार्टीक बैसार मे हुनका पहुँचितहि हड़कम्प मचि जाइत छलै। पुरना पीढ़ीक नेता सभ संकोच आ नवका पीढ़ीक नेतासभ हीनता

बोध सँ ग्रस्त भ' जाइत छलाह।

जहिया ओ महिला कॉलेज मे ज्वाइन कयने रहथि तहिये सँ लोकसभ भारी कन्फ्यूजन मे छल जे ओ विवाहित छथि वा अविवाहित। वाम हाथ मे सोनाक दू टा चूड़ी आ दहिन हाथ मे रिस्टवाच। माथ पर सेनुरक कोनो दर्श नहि। यदि करितो रहल हेतीह तँ से अदृश्य। बहिर्मुखी रहितो कहियो हुनका मुँह सँ एहि मादे किछु बहरायल नहि छलनि। हुनक स्वभावक उग्रता ककरो एहि मादे किछु जिज्ञासा करबाक साहसो नहि करय दैत छलै।

उषा जीक उग्रताक चपेट मे आयल कुंठित पुरुष-समाज हुनका मादे कतोक खिस्सा पसारि देने छल। खास क' ननटुनमा नेता सभ। ओकर सभक कहब छलै जे खढ़-पात खायवाली निमूधन बकरी तँ मतेमिआइत रहैत अछि। तखन कड़गड़ जुआनीवाली उषा जी कतहु शांत रहैत हेतीह। डॉक्टर, सेठ आ प्रांतीय स्तरक प्रभावशाली नेता सभ सँ हुनक संबंधक कतोक कथा एहि शहरक वातावरण मे पसरल छलै...।

महिला महाविद्यालयक गर्ल्स हॉस्टलक सुपरिंटेंडेंट उषा जी पर लोक आरोप लगबैत छल जे जहिना अपने छुट्टा भेलि बौआइत रहैत छथि तहिना हॉस्टलक लड़की सभ कैँ उन्मुक्त विचरण करबाक लेल छुट्टा छोड़ने रहैत छथि...। किछु लड़की कैँ अपन कब्जा मे कयने छथि जकर उपयोग-प्रयोग अपन राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा कैँ पूरा करबाक लेल सेहो करैत छथि...। एहि मे कतेक साँच आ कतेक फूसि छै, से प्रिंसिपल साहेब कैँ ठीक-ठीक पता नहि छलनि। ओ बेसी खोजबीन करबाक इच्छुको नहि रहलाह। कहियो एहि सभक परबाहियो नहि कयलनि। ओ तँ एही लेल अपना कैँ धन्य मानैत छलाह जे अगम अथाह झीलक बीच फुलायल कमलक फूल जकाँ सभ कैँ सिहबैत, गैंची माछ जकाँ कतेक लोलुपक चाँगुर मे फँसैत-फँसैत पिछड़ि जाइत, एहि शहरक शैक्षिक-राजनैतिक जगत मे दामिनी जकाँ दमकैत उषा जी हुनक सखी छथिन...। खास क' सांध्यकालीन सेशनक सखी...। जखन ओ अपनहि हाथें पैग बना क' प्रिंसिपल साहेब कैँ आग्रहक संग दैत छलथिन तखन ओ अपन नायकत्व पर स्वयं मुग्ध भ' जाइत छलाह...।

...प्रिंसिपल साहेब सोचैत जा रहल छलाह आ नोकर द्वारा देल गेल चाहक चुस्की नेने जा रहल छलाह...। एहि क्रम मे जखन चुस्कीक संगे मुँह मे मात्र बसात अयलनि तँ ध्यान टुटलनि। चाहक कप रखैत-रखैत तमाकुलक तलब जोर क' देलकनि। ऐन एही ठाम हुनका पत्नीक अनुपस्थिति अखरलनि...। वी.सी.क प्रति जे क्रोध



छलनि आ जकरा एखन धरि दबा क' रखने छलाह, से पत्नी दिस उन्मुख होइत भड़कि उठलनि...। हिनको एखनहि गायब रहबाक छलनि! कहू तँ! हम एखन तमाकुल लेल छटपटा रहल छी आ ओ ओम्हर...।

प्रिंसिपल साहेबक आदति छलनि जे ओ चाह पीलाक तुरंत बाद तमाकुल खाइत छलाह आ सेहो पत्नीक हाथक लगाओल। यावत ओ स्वयं चाह सुड़कैत छलाह तावत श्रीमती जी तमाकुल लगाक' तैयार रखैत छलथिन। ओ चाहक अंतिम घोंट ल' क' कप टेबुल पर रखैत छलाह आ आगाँ मे पसरल कनिआक तरहत्थी पर सँ तमाकुलक जूम ल' जगह धरबैत छलाह। मुँह मे चाहक मिठगर लेर मे जखन तमाकुलक स्वाद मिज्झर होइत छलै तखन एक टा अद्भुत आनंद मे मगन प्रिंसिपल साहेब सोचैत छलाह जे भगवान एहन कनिआ सभ कैँ देथुन। अपन प्राणनाथक तमाकुल संबंधी खगता कैँ ध्यान मे रखैत अन्नपूर्णा जी नित्य अहगर क' तमाकुल लगा क' स्टीलक आयताकार डिब्बी मे भरि क' कॉलेज जयबाकाल हुनका दैत छलथिन। आइयो देने छलथिन। मुदा, कॉलेज सँ सोझे विश्वविद्यालय जाय पड़ल छलनि। पूरा स्टॉक समाप्त भ' गेल छलनि। आब एखन की कयल जाय...?

...छटपटाइत प्रिंसिपल साहेब मनहि मन गुम्हरि रहल छलाह... कि तावत श्रीमती जी आबि गेलथिन। किंचित गंभीर मुखाकृति नेने ओ लग मे आबि बैसलथिन। प्रिंसिपल साहेब कैँ संदेह भेलनि। ईहो तँ ओम्हरे गेल छलीह। श्यामा मंदिर। वी.सी.क रेसीडेंस सँ घुरबाक रस्ता तँ ओही द' क' छै। कहीं हिनक नजरि उषा जी पर तँ नहि पड़ि गेल छलनि? नहि। से बात रहितै तँ तमतमायल रहितथि। एना गंभीर नहि रहितथि। ...तखनहि फेर हुनका किछु खाली-खाली सन... किछु हेरायल-हेरायल सन बुझयलनि...। ओह! तमाकुल बिना...। एहन स्थिति मे पत्नीक गंभीरता सँ खौंझक अनुभव भेलनि...।

''आब अहाँ कैँ की भेल जे एना मुँह लटकौने छी?'' प्रश्नक तीक्ष्णता अन्नपूर्णा जी कैँ प्रभावित नहि कयलकनि। परंच, एतेक धरि ओ अवश्य बुझि गेलीह जे की पूछल जा रहल अछि। क्षणभरि ओ पतिक मुँह पर अभरैत भाव कैँ देखैत रहलीह आ फेर चुपचाप अपन दहिन मुट्ठी मे दबल एक टा पर्चा प्रिंसिपल साहेबक हाथ मे द' देलथिन।

पीयर रंगक घटिया कागतक ओहि चौपेतल पर्चा कैँ प्रिंसिपल साहेब खोलि क' पढ़लनि... सभ सँ ऊपर तीन बेर हनुमान जीक जयकार कयल गेल छलनि... ताहि सँ नीचाँ हुनक चित्र छपल छलनि... चित्र मे हनुमान जीक कुदबाक मुद्रा अंकित छलनि... माथ पर मुकुट... गर, बाँहि, पहुँचा, डाँड़, कान, पयर आदि विभिन्न अंग सभ पर विविध प्रकारक आभूषण... दुनू पयर मे खराम... वाम हाथ पर पहाड़ आ दहिन हाथ मे गदा जकर गोलक दहिन कान्ह पर अटकल छलनि...। तकर बाद एक टा संदेश छपल छलै जे फल्लाँ गाम मे धरती फाड़ि क' हनुमानजी प्रकट भेलाह अछि। ई पर्चा जिनका भेटनि तिनक कर्त्तव्य छनि जे एहने एक हजार पर्चा छपवा क' बँटवा देथि। नहि तँ जबरदस्त हानिक संभावना निश्चित। फल्लाँ गाम मे एक टा व्यक्ति एहि पर्चाक उपेक्षा कयलक तँ ओकर बेटा मरि गेलै... एक टा दोसर व्यक्ति जे फल्लाँ शहरक फल्लाँ मोहल्लाक रहनिहार छल आ फल्लाँ विभाग मे कर्मचारी छल से पर्चा पढ़ि क' फेंकि देलक तँ पराते भेने ससपेंड भ' गेल...। पर्चा मे एहिना बहुत रास फल्लाँ आ फल्लींक उदाहरण गनाओल गेल छल जे वा तँ पर्चा कैँ यथोचित महत्त्व द' लाभान्वित भेल छलाह वा यथोचित महत्त्व नहि देबाक कारणेँ भीषण संकट मे पड़ल छलाह...।

पर्चा खतम होइत-होइत प्रिंसिपल साहेबक पारा गर्म भ' गेल छलनि। एक तँ ओहिना अमलक तलब कैँ अनठियबैत-अनठियबैत म'न खोझायल जा रहल छलनि, दोसर ई पर्चा...। ओ बमकि उठल छलाह, ''अहाँ एही सभ लेल मंदिर जाइत छी? कहाँ सँ उठा क' ल' अनलहुँ ई पर्चा? के देलक? जे देलक से पक्का चारि सय बीस रहल हैत। सार सभ अपन धंधा चलबैत अछि। कतहु एक टा मंदिर ठाढ़ क' देलक आ प्रचारक ई तरीका चुनलक अछि।'' एतबा कहैत-कहैत

प्रिंसिपल साहेब ओहि पर्चा कैं फाड़ि-चीरि क' डस्टबीन मे फेंकि देलथिन।

अन्नपूर्णा जी एक तँ पहिनहि पर्चाक आशय सँ आतंकित छलीह। दोसर ओकरा संग जे व्यवहार प्रिंसिपल साहेब कयलथिन, से देखि क' तँ ओ संभावी दुर्घटनाक भय सँ काँपि उठलीह...। पतिक नास्तिकता पर क्षोभ भेलनि। क्षोभक अधिकता रुदन मे बदलि गेलनि...। ओ चोट्टहि उठि भीतर चलि गेलीह...।

प्रिंसिपल साहेब अचल रहलाह। मुदा, राति मे जखन नितांत अंतरंग क्षण मे पत्नीक निर्ममता सँ पाला पड़लनि तखन चलायमान भ' गेलाह। ओ कतबो जोड़-घटाव-गुणा-भाग करैत पत्नी कैं बुझयबाक प्रयास कयलनि जे एहि देश मे देवता आ पीर सभक नाम पर जतेक भूमि पर लोक सभ कब्जा कयने अछि ततेक मे लाखो लोक कैं बसाओल जा सकैत छै आ ई सभ एक तरहक धंधा भ' गेल अछि, तें एकरा सीरियसली नहि ली। तथापि अन्नपूर्णा जी मान' लेल तैयार नहि भेलथिन। दोसर अपनहुँ मनक कोनो कोना मे दबल ई आशंका कुड़बुड़ाय लागल रहनि जे यदि पर्चाक आशय सत्य भेलै तखन...? अंततः ओ बेर-बेर सप्पत खयलनि आ वचन देलथिन जे काल्हि कतहु सँ ओ पर्चा उपर करताह आ छपवा क' बँटवा देताह...। मुदा, से क' नहि सकलाह... व्यस्त जीवन मे ई संभव नहि भ' सकल छलनि। पत्नी कतेक दिन धरि मन पाड़ैत रहलथिन...। नहूँ-नहूँ बात पुरान होइत गेलै आ ध्यान सँ उतरैत गेलनि...। आ आइ ई दिन उपस्थित भ' गेल छनि...।

विद्यामंदिर मे कंडोम

प्रिंसिपल साहेबक गाड़ी आदर्श महाविद्यालयक मुख्य द्वार लग पहुँचलनि तँ अचानक हुनक नजरि नगर-भवन दिस गेलनि। नगर भवनक कैम्पस मे उदासी पसरल जकाँ बुझयलनि। छओफिट्टा छहरदेबाली सँ बेढ़ल नगर-भवन अप्पन कैम्पसक उजरैत हरियरी कैं चुपचाप देखैत दक्खिन मुँहे ठाढ़ छल...। एहि नगर भवनक मंच पर दक्खिने मुँहे ठाढ़ भ' क' रहरहाँ डपोरशंखी भाषण करिते रहैत छल लोक सभ... सांस्कृतिक गतिविधि लगभग शून्य जकाँ...! प्रिंसिपल साहेब आइ धरि ई नहि बूझि सकल छलाह जे नगर-भवनक पछुआर मे महाविद्यालय छै वा महाविद्यालयक अगुआर मे नगर-भवन!!

प्रिंसिपल साहेब गाड़ी कैं गैरेज मे लगाक' अपन ऑफिस लग अयलाह। दूरहि सँ ऑफिसक देबाल पर स्वर्णिम आखर मे अपन नाम कैं चमकैत देखि एक टा गर्वक भाव सँ भरि उठलाह। चपरासी एखन नहि आयल छलनि। यद्यपि चाभी अपना लग छलनि तथापि अपनहि हाथें अपन कार्यालय फोलि क' बैसब पदक मर्यादाक विरुद्ध बुझयलनि। लगलनि जेना ओ किछु पहिनहि कॉलेज आबि गेलाह अछि। घड़ी देखलनि। नौ बजि रहल छलै। कॉलेजक गतिविधि सही ढंग सँ दस बजे प्रारंभ होइत छलै। ओना आनर्सक फाइनल इयरक क्लास साढ़े साते बजे सँ प्रारंभ भ' जाइत छलै। जतय-ततय किछु छात्र सभ देखाइ पड़ि रहल छलै... भ' सकैए प्रयोगशाला दिस जाइत हैत...।

कॉलेज भवनक निर्माण अद्भुत शैली मे भेल छलै। ऊपर सँ नीचाँ धरि चीरल अंडाक आधा भाग कैं जँ कटलाहा भाग ऊपर मुँहे रखैत राखि देल जाए तँ कालेजक आकृति कैं बूझल जा सकैए। अकास सँ देखला पर बुझाइत जे अर्द्धअंडा ऊपर मुँहे राखल अछि...। अंडाक निचला भाग दिस मुख्य प्रवेश द्वार। ओतय सँ आरंभ करू। वाम दिस सँ चलू। कैम्पस दिस खुजैत वरंडावला कोठली सभ...। बढ़ैत चलू...। अंडाक शिखर भाग लग पहुँचला पर एक टा बड़का सभा-भवन...। फेर आगाँ बढ़ला सन्तां ओहिना वरंडा वला कोठली सभ...। आगाँ बढ़ैत-बढ़ैत मुख्यद्वार धरि पहुँचि जायब। ई तँ भेल मुख्यपाँति। एहि संपूर्ण संरचनाक पाछाँ ओहिना कोठली सभक दोसर पाँति जाहि मे प्रयोगशाला सभ, स्टाफ कॉमन रूम, प्रिंसिपल क्वार्टर आ किछु क्लास रूम सभ। मुख्य कैम्पस सँ एहि दोसर पाँति दिस जाइत रस्ता। दुनू दिस अर्थात् पूब आ पच्छिम दिस। कैम्पसक बीच मे अंडेकार पार्क...।

पार्क मे फुलायल गुलाब, गेना, डहेलिया, गुलदाउदी आदि कैं उचटैत दृष्टिएँ देखैत प्रिंसिपल साहेब बाम कातक रस्ता धयने प्रिंसिपल क्वार्टर दिस बढ़ैत चलि गेलाह...। प्रायः नौ बर्ख पूर्व भूकंप मे क्वार्टरक छत सभ चहकि गेल छलै...। प्राचार्य गुप्ता जी क्वार्टर कैं छोड़ि क' भाड़ाक मकान मे चलि गेल छलाह। हुनका गेलाक बाद आयल छलाह वृंदावन बाबू। मुदा, ओहो एकर मरम्मति दिस ध्यान नहि देलथिन। किएक ध्यान दितथिन? शहर मे अपन मकान छलनिहें। आवास-भत्ता भेटिए जाइत छलनि। तखन किएक तरद्दुद उठबितथि?

प्रिंसिपल साहेब अयलाह तँ एहि दिस ध्यान देलथिन। दौड़-बड़हा क', एकर जीर्णोद्धार कराबय लेल, फंड अनलनि। ओकरे टेंडर खुजबाक छै परसू। जकरा ठीकेदारी देबाक छनि, से मोन बना चुकल छथि। ओकरे देथिन जे लॉन टेनिसक कोर्ट बनौने छल। अमरेश खटिक विश्वासू आदमी छनि। यथोचित् कमीशन तँ देबे करतनि। संगहि, जतेक दिन धरि चाहताह काज कैं नमरौने-लटकौने रहतनि। ओना ओ लोक सभक समक्ष एहि क्वार्टर मे मरम्मति भेला सन्ताँ शीघ्र आबि जयबाक प्लानक घोषणा कतोक बेर क' चुकल छथि। परंच ओ तँ हृदय सँ चाहैत छलाह जे ओ दिन जतेक विलंब सँ आबय ततेक नीक...। कारण? ...सभ कारण बूझब जरूरी नहि होइत छैक ने!

ओ आगाँ बढ़ैत गेलाह। स्टाफ कॉमन रूम एखन बन्न छलै। खिड़की मुदा खुजले छलै। नजरि गड़ा क' ओ भीतर हुलकी देलनि... उनतीस इंचक स्क्रीन वला टी.वी. मौन भेल बैसल छल— निष्क्रिय... निर्भाव...। राति मे यैह की सभ देखौने छलनि...। प्रिंसिपल साहेब कैं एक टा अद्भुत गुदगुदी बुझयलनि पाँखुर मे...। छाती मे धुकधुकी बढ़ैत अनुभव भेलनि...। कि तावत् घूरन चपरासी अबैत नजरि पड़लनि।

''की हौ घूरन? स्टाफ रूम साफ भ' गेलै?''

''हँ, सर! साफ करबा देने छिऐ। खोलि दिय' की? देखबैक?''

''नहि। ओना खोलि दहक। स्टाफ सभ अओतै तँ खुजल रहबाक चाही। हमरो ऑफिस खोलबाक' रखिह'।'' चाभीक गुच्छा घूरन कैं धरा प्रिंसिपल साहेब आगाँ बढ़ि गेलाह। घूरन विश्वासू लोक अछि। जरूर साफ करबा देने हेतै। तें प्रिंसिपल साहेब अपन नोकर गणेश कैं चाभी द' क' घूरनक डेरा पठौने छलथिन भोरे। रतुका अवशेष कनिको नहि रहबाक चाही। मुदा ओ 'चीज' के ल' गेलै? आब ओतेक लोक मे कोना पता लगतै? आ की, पता लगायब ठीक हेतनि...? एतेक साहस छनि?

प्रिंसिपल साहेब आगाँ बढ़ैत गेलाह...। सभा-भवन दिस सँ एक टा गलियारा द'क' कैम्पस मे अयलाह...। सभा-भवनक अगुअइत द'क' बढ़ैत पुनः एक टा गलियारा द' क' भीतर गेलाह...। जूलॉजीक प्रयोगशाला... एकाएक हुनका झटका जकाँ लगलनि। प्रयोगशाला कात मे नाली मे किछु देखाइ पड़लनि...। नालीक पानि ओवरफ्लो भ' रहल छलै... नाली अवरुद्ध छलै...। जतय अवरुद्ध छलै तत' नमरिक' देख' चाहलनि... अपन आँखि पर विश्वास नहि भेलनि... प्रायः बीस-पच्चीस टा उपयोग कयल कंडोम जमा छलै... ईंटक अद्धा आ पॉलिथिनक संग अँटकल...। एत' कत' सँ आबि गेलै? ...महाविद्यालय मे कंडोम...? छी... छी...! विद्याक मंदिर मे...! बाबू उमाकांत ककरा परतारै छिऐ? की ई साँचे आब विद्याक मंदिर रहि गेल अछि? हृदय मे झाँकि क' बाजू। एकरा विद्याक मंदिर रह' देने छिऐ अहाँ सभ...? ऊहाँ अपने राति मे की सभ कयलहुँ...? अपनहि भीतर सँ

केओ टोकैत–हूथैत अनुभव भेलनि... । ओ आगाँ नहि सोचि सकलाह... । सोझे दोगल्ली द' क' कैम्पस मे आबि गेलाह... आ एक टा पैघ साँस लेलनि... ।

अमीर बलबनक प्रताप

चपरासीक अभिवादन केँ कनेक माथ डोला क' स्वीकारैत गांभीर्यक संग जखन ओ ऑफिस मे प्रविष्ट भेलाह तँ बल्ली बाबू केँ पहिनहि सँ प्रतीक्षा मे विराजमान देखि माथा ठनकि उठलनि!

बल्ली बाबू एहि कॉलेजक बेताज बादशाह छलाह। फिजिक्स विभाग मे डिमॉन्स्ट्रेटरक पद सँ यात्रा प्रारंभ क' एखन धरि रीडर पद धरिक यात्रा संपन्न क' चुकल छलाह। ढकफेरी आ पैरवीक नव–नव संस्करण तैयार क' ओकरा शिक्षाक बाजार मे भजयबाक कला मे जतबा ओ निष्णात छलाह से हुनका कहियो विश्वविद्यालयक कुलपति बनबा देब' लेल पर्याप्त छलनि... । मुदा, हुनक नजरि तँ कतहुँ अन्यत्र छलनि। कुलपति बनब हुनक लक्ष्य नहि छलनि। ओ तँ ओतय पहुँचय चाहैत छलाह जतय सँ हुनक संकेत पर कुलपति लोकनि उठक–बैसक करथि... ।

बल्ली बाबूक असली नाम छलनि मुरलीकृष्ण ठाकुर। हुनक जाति छलनि अमीर बलबनक। इतिहासक कनिको ज्ञान रखनिहार केँ बल्ली बाबू केँ देखिते रजिया सुलतानक चालीसो अमीर मे सर्वाधिक चतुर–कुटिल–अवसरवादी मुदा मृदुभाषी अमीर बलबन मोन पड़ि जाइत छलै। समवयस्की मित्र सभक मुँहें परिहासक प्रसंगेँ उच्चरित 'बलबन भाइ' पछाति जाक' गरिमा पाबि 'बल्ली बाबू'क रूप मे परिवर्तित भ' गेल छलै। अपना केँ व्यवहारिक राजनीति केर महान आचार्य बुझनिहार बल्ली बाबू बरोबरि एहि बात पर जोर दैत रहैत छलाह जे स्वतंत्रता संग्राम मे उभरि क' आगाँ आबयवला अधिकांश नेता बैरिस्टर वर्ग सँ छलाह। अजुका राजनीति केर भविष्य अध्यापक वर्गक हाथ मे छै। नजि छै तँ होयबाक चाही... ।

एहि दिशा मे ओ बहुत पहिनहि डेग उठा चुकल छलाह... ।

एहि कॉलेज मे जहिया हुनक नियुक्ति डिमॉन्सट्रेटरक पद पर भेल रहनि तहिये सँ ओ लागि पड़लाह। प्रैक्टिकल एक्जाम मे एक्सटर्नलक रूप मे वा पीएच.डी.क वाइवा लेब' लेल बाहर सँ जतेक प्रोफेसर सभ अबैत छलाह तिनक ओ बड्ड भक्तिभाव सँ सेवा करैत रहलाह... । फल–स्वरूप एम.एससी. कयलनि... व्याख्याता पद पर नियुक्ति भेटलनि... एही कॉलेज मे पोस्टिंग पौलनि... पीएच.डी. कयलनि... आ एखन रीडर छलाह... शीघ्रहि प्रोफेसर होयताह... ।

बिहारक कोन कॉलेज छै जाहि मे बल्ली बाबूक पहुँच नहि छलनि... । से मात्र अपनहि विषय सँ संबंधित विभाग मे नहि। आनो–आन विषय सबहक प्रोफेसर सभ ओहिना मान–सम्मान दैत छलनि। एहि मान–सम्मानक आवश्यकता होइत छलनि खासक' परीक्षाक समय... ।

इंटर सँ ल' क' मास्टर डिग्रीक परीक्षाक समय लक्ष्मीक दुलारू परीक्षार्थी सभ बल्ली बाबूक दरबार मे हाजिरी दैत छल। बल्ली बाबू अपने ककरो सँ डायरेक्ट गप्प नहि करैत छलाह... । सभ हुनक पट्ट शिष्य सभ सँ भेंट करैत छल। जतेक परसेंट अंक चाही ताहीक अनुरूप पाइ जमा करैत छल सभ... । पट्ट शिष्य सभ एक टा डायरी मे परीक्षार्थीक नाम, रॉल, रॉल कोड, सेंटर कोड, मार्क्सक वांछित परसेंट आ जमा राशि नोट क' लैत छल... । ई प्रक्रिया परीक्षा प्रारंभ होअय सँ पूर्वहि सँ प्रारंभ भ' जाइत छलै। पट्ट शिष्य सभ प्रत्येक परीक्षार्थी केँ एक टा खास संकेत चिह्न आवंटित करैत छलै जे ओ अपन उत्तर पुस्तिका मे खास पृष्ठ पर अंकित क' दैत छलै... । आ तकर बाद परीक्षार्थीक काज खतम। बल्ली बाबू एंड कंपनीक काज शुरूह... ।

विश्वविद्यालय द्वारा कदाचार केँ रोकबाक आ यथासंभव परिशुद्ध परीक्षाफल देबाक लेल कोडिंगक जे चक्रव्यूह रचल जाइत छलै तकरा भेदबाक ई खास अस्त्र छलै बल्ली बाबू एंड कंपनीक। तों अपन कोडिंग करा हम अपन करबौ... । परीक्षक लग जखन बल्ली बाबूक एजेंट पहुँचैत छल तखन बड्ड सरलतापूर्वक कॉपीक ढेर मे सँ ओहि खास संकेत–चिह्न–युक्त कॉपी केँ चीन्हि लेल जाइत छलै आ पेमेंटित राशिक अनुरूप अंक चढ़बा लेल जाइत छलै... ।

ओना एहि क्षेत्र मे एहि विश्वविद्यालयक विभिन्न कॉलेज मे कतोक लोक अपन–अपन हाथ–पयर भाँजि रहल छलाह, मुदा बल्ली बाबूक बाते जुदा। विश्वविद्यालयक परीक्षा नियंत्रक सँ सोझे संपर्क मे छलाह ओ। भारतक विभिन्न तकनीकी संस्थान सभ मे नेपाली मूलक छात्र सबहक लेल कोटा निर्धारित छलै जाहि मे प्रवेश मार्क्स बेसिस पर होइत छलै। बल्ली बाबू परीक्षा नियंत्रक केँ ई बुझयबा मे सफल भ' गेल छलाह जे नेपाली छात्र सभ कामधेनु अछि। जतेक दूहि सकी, दूहि लिय'। दूहि की लिय? अहाँ खाली दूध राखय लेल थैलक व्यवस्था क' लिय'। दूहि क' हम देब। फलस्वरूप दुनू बंधु कतेक टन दूध जमा कयने हेताह, से ठेकान नहि।

बल्ली बाबू अपन एही कलाक बलेँ कतोक लोकक भविष्य बना देलथिन। संगहि अपन बेटा–बेटी–पुतोहु–जमाय सभ केँ डॉक्टर, इंजीनियर, व्याख्याता आदि बना क' निश्चिंत भ' गेल छलाह... । आब हुनक नजरि राजनीतिक कर्मभूमि पर छलनि जाहि मे ओ झंडा फहराब' लेल उताहुल छलाह... ।

राजनीतिक खेत चरबाक अधिकार आइ अध्यापक लोकनिक छनि, से विचार मात्र बल्ली बाबूक छलनि, से बात नहि। अधिकांश प्राध्यापकक मध्य ई विचार अत्यधिक लोकप्रिय छल। सभ केँ यैह लगैत छलनि जे राजनीति रूपी नायिका हुनके टा लेल मिलनोत्सुका भेलि पलंग पर प्रतीक्षारत छनि। जाहि प्राध्यापक सँ गप्प कटितहुँ सैह अपना केँ तेना प्रस्तुत करैत जेना ओ कोनहु क्षण जननायक भ' जायत। आ जे पहिनहि सँ स्थापित नेता सभ छल से सभ मानैत छल जे प्राध्यापक सन बूड़ि दोसर कोनो जीव नहि। जँ ओकरा एहि सुखाभासी भ्रम मे रह' देल जाय जे देशक कर्णधार वैह अछि तँ ओकरा सँ बढ़ि क' नीक प्रचारक भोम्हाशंख भेटि नहि सकैए।

संक्षेप मे ई जे कॉलेज सबहक स्थिति तात्कालिक राजनीति केर परिप्रेक्ष्य मे महत्त्वपूर्ण भ' गेल छलै। खासक' एहि आदर्श महाविद्यालयक। स्थानीय सँ ल' क' राजधानीय नेता सबहक वक्रदृष्टि एहि महाविद्यालय पर गड़ल रहैत छलै। ई कॉलेज 'कैडर मैनुफैक्चरिंग कंपनी लिमिटेड : अंडरटेकिंग बाइ पॉलिटिकल पार्टीज आफ बिहार'क नाम सँ प्रसिद्ध भ' गेल छलै। स्वाभाविक छलै जे अधिकांश राजनीतिक दल आ महत्त्वाकांक्षी नेता सभ एत' अपन–अपन लॉबी चला रहल छल। एहि लॉबीक लपेट मे छात्र सभ तँ आबिए गेल छल। प्राध्यापक सभ सेहो उत्साहपूर्वक आबय लेल उताहुल छलाह... ।

असल मे अधिकांश प्राध्यापकक हृदय मे एक टा दिव्यभाव उदित भ' चुकल छलै जे अध्ययन–अध्यापन गृह गींजब थिक। असली चीज छिऐ राजनीति। राजीनतिए अजुका लोकक परमधर्म आ करणीय कर्म छै। राति–राति भरि आँखि फोड़ि क' पढ़ू... आइ.ए.एस., आइ.पी.एस., इंजीनियर, डॉक्टर वा विद्वान् प्राध्यापक बनू... आ तकर बादो जँ सुपुरुखनंदन–औंठाबोर–कर्मकाक मंत्री सबहक देहरि पर खबासी मुद्रा मे ठाढ़ रह' पड़य तँ ताहि सँ नीक स्वयं मंत्री बनबाक प्रयास किऐ नहि कयल जाय? एहि विचारक प्रबल प्रवक्ता छलाह बल्ली बाबू।

बल्ली बाबूक हृदय मे एहि कॉलेजक प्रति प्रेम कोंचि–कोंचि क' भरल छलनि। ओ कॉलेजक अंग–अंग सँ अति निकटक परिचय रखैत छलाह। खास क' जत' मुद्रामोचनक संभावना रहैत छलै। जहिया सँ ओ एहि कॉलेज मे छलाह तहिया सँ कइयन टा प्रिंसिपल अयलाह आ गेलाह। बल्ली

बाबू अपन ट्रैक पर चलैत रहलाह। हुनक प्रताप बनल रहलनि। कोनो-कोनो हुनक कालेजक प्रति 'प्रेम-भाव' पर शंका कयबो कयलक, मुदा 'बार भयो नहि बंक!' कारण? कॉलेजक प्रति हुनक पवित्र ऐतिहासिक प्रेम आ प्रेम करबाक परम मौलिक ढंग!

एही बीच मे प्रिंसिपल साहेब पहुँचलाह एहि कॉलेज मे। पहिने तँ बल्ली बाबू एहि नवागंतुक प्रिंसिपल केँ अपन संपूर्ण अनुभव आ योग्यताक उपयोग करैत अँटकारि-अँटकारि क' देखलनि। तदुपरांत योजनाबद्ध ढंग सँ पटरी पर अनलनि। लालपरीक लालिमाक लाभ आ नोटक करकरीक मजा कोना लेल जाय से बल्ली बाबू अपन खास स्टाइल मे प्रिंसिपल साहेब केँ बुझा देलथिन। नहू-नहू ओ प्रिंसिपल साहेब केँ अपन जाल मे फँसा लेलनि। शहरक शिक्षा-जगत मे प्राय: सभ लोक ई बात जनैत छल जे असली प्रिंसिपल छथि बल्ली बाबू। एडमिशन आ एक्जामिनेशन—दुनू अवसर पर जनता दरबार जगबैत छल बल्ली बाबूक, घूनी सुनगबैत छल बल्ली बाबूक। एतबहि नहि। सरस्वती पूजा सँ ल' क' कॉलेजक मरम्मति वा कोनो नव-निर्माणक ठीकेदारी धरि सभ काजक भार सेहो बल्ली बाबू अपन कोनो पट्ट शिष्य केँ देया दैत छलथिन। असल मे हुनका प्रिंसिपल साहेबक स्वास्थ्यक किछु बेसिए चिंता रहैत छलनि। तेँ ओ हुनका तनाव आ फिरेशानी सँ फराके राख' चाहैत छलाह।

मुदा, एम्हर आबि क' अकस्मात् प्रिंसिपल साहेब जेना मौन घोषणा क' देने छलथिन जे हुनक स्वास्थ्य आवश्यकता सँ किछु बेसिए ठीक भ' गेलनि अछि। कॉलेजक अधिकांश काजक प्रति वर्द्धमान हुनक रुचि चौकाब'वला भ' गेल छलनि। कारण दू टा छलै। पहिल तँ ई जे नेताक रूप मे स्थापित होयबाक लेल उताहुल उषा जी, जे बल्ली बाबूक विरोधी लॉबीक छलीह, एक दिन मदिरा सेवनक बेर प्रिंसिपल साहेब केँ ई बुझयबा मे सफल भ' गेलीह जे ओ तँ स्वयं ब्रह्मक अंश थिकाह। ककरो सँ कम प्रतिभाशाली, प्रभावशाली आ शक्तिशाली तँ नहिए छथि, बेसी जे होथि। तेँ बेकारे बल्ली बाबू केँ एतेक लिफ्ट देबाक कोन काज? प्रिंसिपल साहेब केँ लागल रहनि जे ठीक कहैत छथि। बेकारे ठगायल जाइत छलहुँ। हिस्सा लेब' सँ तँ नीक जे परम स्वतंत्र, सिर पर नहि कोऊ भ'क' सर्वग्रासी बनल जाय। ओहि दिन अपन एहि सखी पर बड्ड सिनेह उमड़ल रहनि। ठीके! यदि प्रेरणाक रूप मे कोनो सुंदरी उपलब्ध रहय तँ कतेक नीक बात! उषा जी आन कॉलेज मे छथि तेँ की? लोक कतबो बदनाम करनु हुनका। ओ की छथि से तँ वैह जनैत छथि। दोसर कारण रहै जे जाहि विधानपार्षद भवनाथ रायक पैरवीक बलेँ ओ प्रिंसिपल बनल रहथि तिनकर भड़कैत क्रोधक खबरि हिनका लग पहुँचि रहल छलनि।

विधान परिषदक विगत चुनाव मे बल्ली बाबू स्वतंत्र उम्मीदवारक रूप मे भवनाथ रायक प्रतिद्वंद्वी भ' क' उतरल छलाह। प्रदेशक मुख्यमंत्रीक आशीर्वाद छलनि तेँ राय जी कहुना चुनाव जीति गेल छलाह। नहि तँ बल्ली बाबू हुनक छक्का छोड़ा देने छलथिन। एम्हर आबि क' बल्ली बाबूक लोकप्रियता आर बढ़ि गेल छलनि। आ ताहि बल्ली बाबू केँ एतेक लिफ्ट द' रहल छलाह प्रिंसिपल साहेब। ई बात कोना सोहाउन राय जी केँ। फलत: हुनक क्रोध भड़कि उठल छलनि। प्रिंसिपल साहेब सोचिए रहल छलाह जे की करी, की नहि कि एक दिन पार्टीक जिला कार्यालय मे राय जी सँ भेंट भ' गेलनि। बस नीक जकाँ हुड़पेटि देलथिन ओ। परिणाम भेलै जे प्रिंसिपल साहेब बल्ली बाबू सँ कटैत गेलाह...।

प्रिंसिपल साहेबक एहि मुद्रा परिवर्तन सँ बल्ली बाबूक कान ठाढ़ भ' गेल छलनि। ओ अपना जनतबे प्रिंसिपल साहेबक अकिलदानी मे एहि बात केँ ढुकयबाक लाख प्रयास कयलनि जे हुनक स्वास्थ्य ठीक नहि भेलनि अछि अपितु किछु आओर बेसी खराब भ' गेलनि अछि। तेँ अस्वाभाविक प्रवृत्ति सभ उभरि आयल छनि। मुदा, से मान' लेल प्रिंसिपल साहेब आब तैयार कहाँ छलथिन...। तकरे परिणाम भेलै जे लॉन टेनिसक कोर्ट बनयबाक ठेका बल्ली बाबूक बेरोजगार इंजीनियर बेटा केँ नहि भेटि क' अमरेश खटिक केँ भेटि गेलै जे प्रिंसिपल साहेबक विश्वासू लोक छल...। ई पराजय बल्ली बाबू केँ पिनपिना देने छलनि...।

एही बीच मे एक टा महत्त्वपूर्ण राजनीतिक परिवर्तन भेलै। गोपनीय राजनीतिक अभियानक क्रम मे प्रदेशक मुख्यमंत्रीक समाद एक संगे बल्ली बाबू आ भवनाथ राय केँ भेटलनि। दुनू गोटे मे समझौता कराओल गेल। निश्चय भेलै जे विधान परिषदक आगत चुनाव मे पार्टीक अधिकृत उम्मीदवार हेताह बल्ली बाबू आ रायजीक मनोनयन कराओल जेतनि। एहि तरहेँ दुनू गोटाक गोटी लाल भ' जेतनि। मुख्यमंत्रीक समक्षहि प्रसन्नतापूर्वक बल्ली बाबू ओहि पार्टीक सदस्यता ग्रहण कयलनि आ विजयी भाव सँ आपस भेलाह। प्रिंसिपल साहेब केँ एहि परिवर्तनक आभास छलनि। मुदा, आब ओ डगमगायवला नहि छलाह। हुनक प्रेरक शक्ति हुनका स्थिर रहबाक लेल प्रेरित करैत रहलथिन आ ओ खुशी-खुशी प्रेरित होइत रहलाह। असल मे एहि बीच ओ स्वतंत्रताक आनंद ल' चुकल छलाह...। आब ओ फेर बल्ली बाबू केँ भाव देब' लेल तैयार नहि छलाह...।

... एम्हर बल्ली बाबू सेहो अपन ब्रह्म केँ जगौलनि। डिफेंसिव फिल्डिंग केँ ऑफेंसिव स्वरूप देलनि। पट्ट शिष्य सभ केँ फिल्डिंग बॉलिंग पर लगा प्रिंसिपल साहेबक बिकेट खसबाक प्रतीक्षा करय लगलाह। आवश्यकता पड़ला पर अपनहुँ बॉलिंग करबाक प्रतिज्ञा क' चुकल छलाह...।

चौअनिजा मुस्कीक रहस्य

बल्ली बाबू केँ पहिनहि सँ प्रतिक्षा मे बैसल देखि हुनक वाम आँखि फड़कि उठल छलनि। हुनका नजरि मे बल्ली बाबूक आकृति शनि ग्रह सँ मिलैत छनि। दोसर बात ई जे जहिया सँ हुनक स्वास्थ्य किछु बेसिए ठीक भ' गेल छलनि तहिया सँ ओ बल्ली बाबू सँ कतरायले रहैत छलाह...। प्रिंसिपल साहेब केँ अबैत देखि बल्ली बाबू करबद्ध मुद्रा मे स्वागतार्थ कुर्सी छोड़ि क' ठाढ़ भ' गेलाह।

दिमागक कोनो खास पुर्जा खड़खड़ा उठलनि प्रिंसिपल साहेबक। की बात छै? एना भोरे-भोर आबि उपस्थित छथि ओ! दोसर, एहन विनम्रता तँ बल्ली बाबूक स्वभावक अंग नहि छनि। समय पर कॉलेज आयब बल्ली बाबू जनिते नहि छथि। जँ कहियो पहिने कॉलेज पहुँचियो जाइत छलाह तँ एना स्वागतार्थ कुर्सी कहाँ छोड़ैत छलाह। बस अपन महिमा आ गरिमा संग बैसले-बैसल मुखसलामी मारैत छलाह। प्रिंसिपल साहेब हुनक ओहि अशिष्टता केँ मजबूरीवश परम उदारतापूर्वक अनठिया दैत छलथिन। मुदा आइ...? आइ की बात छलै? बल्ली बाबूक एहि अस्वभाविक मुद्रा परिवर्तन आ तकर भावी आ सहगामी क्रियान्वयन द' सोचैत प्रिंसिपल साहेब दू पल जेबिआयल मुद्रा मे ठाढ़ रहलाह... फेर हाथ केँ जेबी सँ मुक्त क' बैसि गेलाह। पूछलथिन, ''की बल्ली बाबू, हाल-चाल नीके ने?''

''अहाँ सँ नीक थोड़े हेतै सर?'' चौअनिआ मुस्की छोड़ैत कहलथिन बल्ली बाबू। धड़कि उठलनि करेज प्रिंसिपल साहेबक? ओ सोचय लगलाह जे एकर की अर्थ? कहीं हिनका पता तँ नहि चलि गेलनि? मुदा, से कोना भ' सकैत छै? रातुक प्रसंग मे सम्मिलित व्यक्ति सभ तँ सप्पत खयने छल? तखन कोना...? नहि-नहि! ओहिना औपचारिकता मे कहने हेताह। शंका नहि करबाक चाही।

अकस्मात् मोन पड़लनि जे रातुक ग्रूप मे किछु एहन लोक छल जे बल्ली बाबूक भूतपूर्व

पट्ट शिष्य छल। एम्हर आबि क' बल्ली बाबू सँ फराक भ' गेल छल आ प्रिंसिपल साहेबक शरण मे आबि गेल छल। बहुत शोषण कयने छलथिन बल्ली बाबू ओकर सबहक। जेना विवेका आ ज्ञानेश्वर। ई दुनू बल्लीए बाबूक पैरवी पर एडहॉक बेसिस पर कैमेस्ट्री आ फिजिक्स लैब मे लैब असिसटेन्टक पद पर राखल गेल छल...। कतोक बर्ख बितलाक बादो एब्जार्व नहि भेल छल। कहाँदन बल्ली बाबू अपन स्वार्थक लेल एब्जार्व नहि होअय दैत छलथिन...। तेँ ओ सभ चुगली नहिएँ लारने होयत। कोन मुँहे लारैत...? नहि-नहि। ई हमर भ्रम थिक...।

सोचबाक क्रम आर आगाँ बढ़ितनि। मुदा बल्ली बाबू टोकलथिन, "एक टा बात पूछू सर?"

"पूछू।" आशंका केँ टारैत बजलाह प्रिंसिपल साहेब।

"सर! विद्यामंदिरक प्रधान आचार्य जँ पाखंडी भ' जाइक तँ की होयतै? आदर्शक भाषण झाड़यवला रातुक अन्हार मे अपन गण सबहक संग जे-जे लीला करैत अछि से सभ जँ सबहक समक्ष उजागर भ' जाइक तँ की-की भ' सकैत छै?"

आँय? ई की पूछि देलनि? प्रिंसिपल साहेबक करेज भाथी भ' गेलनि। तथापि साहस क' ओ प्रिंसिपली अंदाज मे पूछलथिन, "की मतलब अछि अहाँक?"

"मतलब तँ अपने नीक जकाँ बुझि रहल हेबै। नहि बुझबाक नाटक जतेक करबाक होअय ततेक क' लेल जाओ। मुदा, एहि भ्रम मे नहि रहल जाओ जे राति खन स्टाफ कॉमन रूम मे चमचा-चमची सबहक संग अपने जे-जे कयल अछि, से सभ ककरो बूझल नहि छै। सौंसे शहर मे गुलगाल भ' रहल अछि... जे...।"

प्रिंसिपल साहेबक माथ पर ई शब्द सभ पाथर जकाँ बरसि रहल छलनि...। चेम्बर नचैत बुझा रहल छलनि...। आ मोन पड़ि रहल छलनि।...

ओ चीज

स्टाफ कॉमन रूम मे प्रायः नित्य साँझ केँ जुटानी होइत छलै। उषा जी तँ अबिते छलीह। कैमेस्ट्री विभागक प्रो. सरदार मेहताब सिंह, फिजिक्स विभागक प्रो. दीनानाथ मेहता, जूलॉजी विभागक प्रो. सचीन्द्र कुमार वर्मा सेहो स्थायी सदस्य छलाह। एकर अतिरिक्त पाँच छओ आदमी आओर...। शतरंजक बाजी, तास, किछु गपशप आ टीवी अवलोकन... आ सभ सँ महत्त्वपूर्ण सांध्यकालीन आचमनि। प्रायः ई सभ राति सात-आठ बजे सँ प्रारंभ होइत छलै आ घर आपस होइत-होइत दस-एगारह बाजि जाइत छलै...। नहू-नहू सभ विदा भ' जाइत छल...। अंत मे रहि जाइत छलाह प्रिंसिपल साहेब आ उषा जी...। जहिया उषा जी बेसी चढ़ा लैत छलीह तहिया भारी तरद्दुत मे पड़ि जाइत छलाह प्रिंसिपल साहेब। कहुना क' हुनका अपन गाड़ी मे चढ़ा क' पानी टंकी चौक धरि अनैत छलाह आ तकर बाद हुनका रिक्शा पर चढ़ा क' महिला महाविद्यालय लेल विदा क' दैत छलथिन। कहियो काल नशाक अधिकता मे उषा जी प्रिंसिपल साहेबक गरा मे झूलि जाइत छलथिन। छोड़य लेल तैयारे नहि होइत छलथिन। प्रिंसिपल साहेब अपन एहि सखी केँ डाँटियो नहि पबैत छलाह...। कहुना क' पिंड छोड़बैत छलाह...। बाद मे हुनका लगैत छलनि जे अन्नपूर्णाक प्रति अपराध क' रहल छथि...। मुदा, फेर जखनहि उषा जी तांबूल रंजित ठोर सँ मुस्की छोड़ैत सामने अबैत छलथिन तँ सभ अपराधबोध बिला जाइत छलनि। ओ विवश भ' जाइत छलाह...। तथापि प्रिंसिपल साहेब ओहन आयोजन द' कहियो सोचनहुँ नहि छलाह। राति मे सभ किछु जेना अनायासे घटित होइत चलि गेल रहै...।

नहि...। आब तँ संदेहक कोनो गुंजाइश नहि...। किछु अनायासे घटित नहि भेल छलै...। विवेकानंद ओहन महग बोतलक व्यवस्था कोना क' सकल? ओहि बोतलक बाजार मे दाम कम-सँ-कम आठ सय जरूर हेतै? से तीन-तीन टा। हँसी ठठाक मध्य अचानक सरदार प्रस्ताव कयने रहै जे विवेका आइ किछु करओ। आ विवेकानंद आधा-पौन घंटा मे तीन टा बोतल, लगभग दू केजी चिकन फ्राइ, आधा केजी फ्राइड काजू आ सलाद ल' क' उपस्थित भ' गेल छल...।

फेर तँ जाम-पर-जाम चलैत गेलै...। हुनका मोन पड़ैत गेलनि जे कोना उषा जी हुनका आग्रहपूर्वक दैत गेलथिन आ ओ अपना केँ संसार मे सर्वाधिक भाग्यशाली बुझैत पिबैत गेलाह...। ओम्हर फराक-फराक समूह मे सभ चुस्की ल' रहल छल...। उषा जी कोन अवस्था मे छथि आ प्रिंसिपल साहेब कोन—से देखबाक जेना ककरो पलखति नहि रहै। धीरे-धीरे दुनू गोटा टंच भ' गेल छलाह...। उषा जीक आँखि लाल भ' गेल छलनि... आँचर ढरकि गेल छलनि... दुनू उन्नत...। एकाएक सरदार केँ एम्हर अबैत देखि उषा जी सम्हरलीह... आँचर सम्हारलनि...।

"क्या सर? माल ठीक था?" सरदार पुछने रहनि।

"वंडर फुल।"

"सर विवेकानंद और ज्ञानेश्वर जी लोगों पर थोड़ी कृपा की जाए। बेचारे कष्ट मे हैं।"

"अच्छा, देखेंगे।"

एकर बाद, प्रिंसिपल साहेब केँ स्पष्ट मो[न] छनि, एकर बादे सरदार कहने रहै, "रे विवेका वह चीज कब तक रक्खे रहोगे? आज का दि[न] शुभ है। लगाओ जरा वी.सी.डी पर। सर का म[न] थोड़ा और खुश कर दो।"

वी.सी.डी. पर ओ चीज लगा देल गेलै अ[आ] ओम्हर क्यो लाइटकक स्वीच ऑफ क' देलकै... संपूर्ण रूम मे अन्हार पसरि गेलै...। सबहक चेतना टीवी पर केंद्रित भ' गेलै...। टीवीक पर्दा पर नहू-नहू जे दृश्य सभ उभरैत गेलै से देखि प्रिंसिपल साहेब केँ रोमांच भ' उठलनि...। शोणित मे आगि दौड़ैत अनुभव भेलनि...। एहि चीजक ओ नामे टा सुनने छलाह...। आइ धरि देखने नहि छलाह...। आइ देखि रहल छलाह... देखबाक पहिनहुँ इच्छा भेल छलनि... मुदा ककरा कहितथिन? वर्जितक लोभ करबाक साहस नहि भेल छलनि...। परंच आइ...। थैंक्स विवेका...

अचानक हुनका लगलनि जे उषा जी हुनक देह मे एकदम सटि गेलथिन अछि... नीक लगलनि... गर्म साँसक स्पर्श वाम गर्दनि प[र] बुझयलनि... उत्तेजित भेलाह... आ ओम्हर टीवीक पर्दा पर जे दृश्य सभ आबि रहल रहल छलै से जुगुप्सा उत्पन्न क' रहल छलनि... एक दिस उत्तेजना, दोसर दिस जुगुप्सा... एकाएक मोन हौंड़' लगलनि... पेट मे मरोड़... ओएअ... ओएअ...। 'की भेल?' 'की भेल? कि भक् द' लाइट आबि गेलै ...। टीवी ऑफ क' देल गेलै...। किछु गोटे हुनक परिचर्या मे लागल...। यद्यपि कै होइत-होइत रहि गेल छलनि तथापि मोन घुमि रहल छलनि... किछु गोटे केँ तमाशा बिच्चे मे खतम भ' जयबाक अफसोस छलै...। मुदा कहबाक साहस नहि...। फेर जेना-तेना सभ किछु समेटल गेल छलै...।

ठीक छै

एखन बल्ली बाबूक पाथर सन बरसैत बात सँ ओ घबरा गेल छलाह...। आँखि चोन्हराय लागल छलनि आ घाम चुहचुहा गेल छलनि...।

मुदा, बल्ली बाबू काँच खेलाड़ी नहि छलाह। जखन आइ अपनहि बॉलिंग शुरू क['] देने छलाह तँ प्रतिपक्षी केँ आउट कैए क' छोड़बाक बिचार छलनि। मुदा चुचकारि क' बाउंसर सँ घायल भ' क' सहानुभूति लुटबाक अवसर ओ बैट्समैन केँ देब' लेल तैयार नहि छलाह। घंटी बजा क' चपरासी केँ बजौलथिन आ जखन प्रिंसिपल साहेब जल पीबि कनेक ऑफियतक अनुभव कयलनि तँ चपरासीक गेलाक बाद चेम्बरक केबाड़ भीतर सँ बोल्ट क' आपस भेलाह आ पुनः प्रहार शुरू कयलनि,

"एखन हम डेरा सँ आबि रहल छलहुँ तँ

'...टाइम्सक सम्वाददाता सँ भेंट भेल छल। ओहो पूछि रहल छल। नहि जानि ओकरा के कहि देलकै। एखन तँ कहुना हम टारि देलियै, मुदा लगैए नहि जे...।''

चोट दमगर छलै। बल्ली बाबू बजैत जा रहल छलाह आ प्रिंसिपल साहेबक कल्पना मे अखबार सबहक मुखपृष्ठ पर बोल्ड आखर मे छपल रतुकी लीलाक खबरि आ तकर शहरक चौक-चौक पर होइत सामूहिक वाचनक दृश्य घूमि रहल छलनि...। अचानक हुनका अपन दहिन तरहत्थीक शुक्र पर्वत लहरैत बुझेलनि।... हुनका लागि रहल छलनि जे लोक सभ हुनका नाम पर थूक-खखार फेंकि रहल छनि... आ कुकुर सभ सेहो हुनके नाम पर मूत्रोत्सर्ग क' रहल छनि...। कि तावत् बल्ली बाबू फेर चोट कयलथिन, ''आ वी.सी. कैं तँ अपने चिन्हिते छिऐ। अपने जखन पीब' लागत तँ ओकर ड्राम सोखि जायत आ ककरो बुझहो नहि देत। मुदा, दोसराक बेर मे...। असल मे जे पकड़ा जाय सैह ने चोर...। अपने आइ धरा गेल छिऐ। सभ कुन्नह सधा लेत एहि बेर...।''

प्रिंसिपल साहेब कोनहु वस्तु त्यागि सकैत छलाह परंच प्रिंसिपली नहि आ से हुनका खतरा मे पड़ल बुझा रहल छलनि...।

एतबहि मे ऑफिसक बाहर हल्ला जकाँ भेलै। संगहि ऑफिसक केबाड़ पर चोट पड़लै। प्रिंसिपल साहेब कैं भेलनि जेना बाहर यमदूत पहुँचि गेल होअय। जाहि परिस्थिति मे ओ पड़ल छलाह ताहि मे बाहर जाय कड़कि क' बजबाक साहस नहि भ' रहल छलनि। ओ घबरायल दृष्टिएँ बल्ली बाबूक दिस तकलनि। बल्ली बाबूक चेहरा सपाट। एकदम स्टोनी फेस! बल्ली बाबू उठलाह। अति गंभीर भावे मुगले आजम जकाँ चलैत केबाड़ लग गेलाह। केबाड़ फोललनि आ बाहर 'युद्धं देहि' केर मुद्रा मे ठाढ़ स्टूडेंट यूनियनक प्रतिनिधि मंडल आ तकर सचिव सँ कृते प्रिंसिपल फुसफुसा क' किछु गप्प कयलनि। पुनः सचिव कैं संग ल' केबाड़ कैं बन्न क' प्रिंसिपल साहेब लग आबि बैसलाह।

बल्ली बाबूक अति गंभीर मुखाकृति देखि प्रिंसिपल साहेबक करेज आर हहर' लगलनि। हुनक प्रश्नाकुल कातर दृष्टि कैं नीक जकाँ अँटकारबाक उद्देश्यें बल्ली बाबू पुनः बाउंसर फेंकलनि, ''कोनो खास बात नहि छै सर। विश्वविद्यालयक छात्र संघ कैं सेहो पता चलि गेल अछि। सभ सत्याग्रह-सह-आंदोलन-सह मारि-पीटि पर उतारू अछि। कहि रहल अछि जे ई तँ कॉलेजक वातावरण कैं दूषित करबाक



भयंकर अपराध छिऐक। हम सभ अल्टीमेटम देब' आयल छियनि। प्रिंसिपल साहेब रिजाइन करथु नहि तँ वी.सी. लग धरना देबनि...।''

प्रिंसिपल साहेब कैं अकास आ पताल दुनू एक्के संग सूझय लगलनि। ओ कल्पना मे विद्यार्थी सबहक वृहत् उद्दंड जुलूस देखि रहल छलाह। नाराक रूप मे गारि आ गारिक रूप मे नारा सेहो सुनि रहल छलाह...। महाजाल मे फँसल माछ जकाँ पड़यबाक प्रयास मे अपना कैं आर ओझराइत पाबि रहल छलाह...। मोन भ' रहल छलनि जे ककरा पाबी जे मुँह नोंचि ली। मुदा, से सुविधा कहाँ छलनि। तँ अपनहि मुँह नोच' लागल रहथि। भकभकयला उत्तर बेसुरती मे अपन नाक महक केस उखाड़' लागल रहथि...। निरुपायताक अनुभव होइतहि गरा-बकौर जकाँ लगैत अनुभव भेलनि...। आँखि डबडबा गेलनि...। हारि क', 'हे गोविन्द राखु प्राण अब तो जीवन हारे' वला मुद्रा मे ओ बल्ली बाबू दिस ताकि क' बजलाह, ''आब की हेतै मुरली बाबू?''

बल्ली बाबू कैं आब जखन विश्वास भ' गेलनि जे ओ हरदा बाज' लेल तैयार छथि तँ पैंतरा बदलैत बजलाह, ''एहि मे घबरयबाक कोन काज छिऐ सर? अपने प्रिंसिपल छिऐ तँ डिजर्बो करियौक। एहन-एहन कतोक समस्या सभ तँ अबिते रहत। एना घबरयबै तँ कोना काज चलत? धैर्य राखल जाओ। सभ ठीक भ' जेतै।'' यैह तँ सुनय चाहैत छलाह प्रिंसिपल साहेब। दिशाहारा लोक कैं जेना ध्रुवतारा भेटि जाइक तहिना हुनका भरोस भेलनि। ओ 'मरता क्या नहीं करता' वला शैली मे एखन ककरहु बाप कहय लेल तैयार छलाह। बाजि उठलाह, ''आब अहीं पार लगाउ मुरली बाबू। नहि जानि कोन पाप चढ़ल छल जे...।''

आब एतेक कालक बाद छात्र संघक सचिव महोदय कैं लगलनि जे हमर उपेक्षा भ' रहल अछि। एतेक पैघ यूनिवर्सिटीक छात्र सबहक नेता छी हम। जहिया मोन होइत अछि यूनिवर्सिटी कैं डोला क' राखि दैत छिऐ। तीस सँ ऊपर उमिर भ' गेल तैं की? एखनहुँ हम लॉ केर स्टूडेंट छी। पाँच साल सँ परीक्षा एही लेल ड्राप क' रहल छी ने जे युवा शक्ति कैं नेतृत्व द' सकी। आ हिनका सबहक नजरि मे हमर कोनो महत्त्वे नहि? अपने मे ओझरायल छथि! अचानक हुनका अपन मायक मुँहे सुनल कहबी मोन पड़लनि जे कूदय-फानय तोड़य तान, ताकर दुनिया राखय मान। सोचलनि जँ आबहु अपन प्रतिभा नहि देखायब तँ ई प्रिंसिपलवा हमर नोटिसो नहि लेत। ओ बमकलाह, ''अहाँ कैं लाज नहि होइत अछि सर। कॉलेजक प्रतिष्ठा कैं दूरि क' क' राखि देलहुँ। आब कोन मुँह ल' क' बाजब हम जे एही कॉलेजक लॉ डिपार्टमेंट मे हम पढ़ैत छी? छी... छी! हद्द भ' गेलै! जखन नौ नम्बरक ई हाल हेतै तखन छौ नम्बरवला सभ की-की करत? आब ई टॉलरेट नहि हैत। आब अहीं रहब की कॉलेजे रहत...। धुआँ-धुआँ क' देब....।''

सचिव महोदयक स्वर जेना-जेना ऊँच आ तेज भेल जा रहल छलनि तेना-तेना प्रिंसिपल साहेबक हालति क्रमशः पतरायल जा रहल छलनि। ओ कखनो बल्ली बाबू दिस तकैत छलाह तँ कखनो सचिव महोदय दिस। कि तावत् बल्ली बाबूक वामा हाथ सचिव महोदयक पीठ पर पड़लनि आ हुनका मुँह सँ झड़ैत धाराप्रवाह सात्त्विक प्रवचनक क्रम एकाएक बन्न भ' गेलनि। जेनाकि ओ टेपरेकार्डर होथि आ स्टॉप वला स्विच हुनक पीठे पर होइन...।

बातक डोरि फेर बल्ली बाबू अपना हाथ मे लेलनि। बजलाह, ''सर, बात बड्ड गड़बड़ा सन गेल अछि। विद्यार्थी सभ गरमा रहल अछि...। प्रेसवला घुरिया रहल अछि...। चैनल वला सभ ताक मे अछि...। अनुशासनहीनता आ मर्यादा-उल्लंघनक खतरनाक प्रश्न उच्चाधिकारी सभ कैं कोनो अप्रिय निर्णय लेब' लेल उकसा सकैत छनि...। ओहि मौगीक की छै? कोनो

प्रतिष्ठा छैक? सौंसे शहर जनैत छै जे ओ...। अहाँ कोना ओकर चक्कर मे पड़ि गेलहुँ...? छी-छी! मैडम केँ पता चलि गेलनि तँ की हेतै? आ कहीं केयो राति मे फोटोग्राफी क' नेने होयत तखन तँ...।'' बल्ली बाबूक उपक्रम एहन सन जे ओ अपन तरकस महक तीर सबहक परिचय द' रहल होथि आ एम्हर प्रिंसिपल साहेबक पेट मे हर कि बुझू जे ट्रैक्टर चलबाक अनुभव भ' रहल छलनि। कुहरैत बजलाह, ''आब अहीं कोनो उपाय सुझाउ।''

''उपाय तँ छै सर। मुदा, हम जे कहब से अपने मानबै तखन ने।''

''कहू तँ।''

अहा! यैह सुनय लेल कतेक दिन सँ व्याकुल छलाह बल्ली बाबू। ओ अपन मुखाकृति केँ परम निर्दोष बना क' भीतरे-भीतर जोड़ घटाओ करय लगलाह। एम्हर आबि क' जतबा घाटा भेल छलनि तकरा किछु हद धरि पूरा करबाक छलनि। संगहि प्रिंसिपल साहेबक ब्लडप्रेशरक ध्यान राखब सेहो जरूरी छलनि। मुदा, मीडिया, छात्र संघ आ आओर किछु लोक केँ मैनेज करब सेहो जरूरी छलनि...। ओ हिसाब लगा रहल छलाह...। आ हुनका विलम्ब करैत देखि प्रिंसिपल साहेबक हवा गुम भेल जा रहल छलनि। अंततः बल्ली बाबू उवाच, ''देखू सर, तीन टा काज करय पड़त। एक, प्रिंसिपल क्वार्टरक मरम्मतिक ठेका हमर पुत्र गोविंद केँ देबय पड़त। दू, विवेकानंद, ज्ञानेश्वर आदिक एब्जार्वेशनक प्रस्ताव आइए पठाब' पड़त। तीन, मीडिया, छात्र संघ आ किछु आओर लोकक मुँह बन्न करबाक लेल एक लाख कैश तुरंत देब' पड़त। तखनहि ई मामिला ड्रॉप हैत।''

''एक लाख...।'' सुनितहि प्रिंसिपल साहेबक मुँह तँ भूजा भूजयवला खापड़ि जकाँ बवाइए गेलनि। संगहि आँखियो अपन जगह छोड़ि क' अकासचारी होअय लेल धड़फड़ाय लगलनि। हुनका विस्मय सँ चिचिआइत देखि बल्ली बाबू सवारी कसलनि,

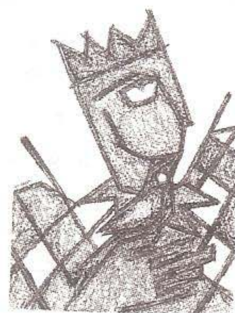
''सोचि लेल जाओ सर। सभ ग्रह केँ शांत करबाक अछि।'' सवारी तर कोंकिआइत प्रिंसिपल साहेब सब्सिडी हेतु अंतिम प्रयास कयलनि,

''अहाँक पहिल दुनू बात तँ हम मानि लेल। मुदा, एतेक पाइ हमही टा किऐ दियौ? आओरो लोक सभ तँ छल ओहि ठाम...।''

बल्ली बाबू केँ भेलनि जे कदाचित् ओ रातुक ग्रुप मे शामिल हुनक पट्ट शिष्य सभ दिस संकेत क' रहल छथि अर्थात फुलटॉस बॉल पर आँखि मूनि क' बैट घुमा रहल छथि। यदि यैह हाल रहल तँ चारि-पाँच टा छक्का ठोकि क' हमर बॉलिंगक सभ औसत केँ बिगाड़ि क' राखि देताह। बातो किछु हद धरि सैह छलै। प्रिंसिपल साहेब रतुके प्रसंग द' सोचि रहल छलाह... विवेका... ज्ञान... सभ प्लान्टेड दूत छल...। भ' सकैए उषा जी सेहो...। नहि-नहि उषा एना नहि क' सकैत छथि...। किएक नहि क' सकैत छथि...? ओ तँ बल्ली बाबूक विरोधी छथि...। विरोधी तँ भवनाथ राय सेहो छलाह...? राजनीति मे कोनो ठीक नहि...। कहीं उषा केँ सेहो कोनो आश्वासन तँ नहि भेटल छनि...? ओह! कतेक बड़का षडयंत्र मे ओझरा गेलहुँ हम...। हे भगवान! ओ जेना-जेना सोचि रहल छलाह तेना-तेना आओर संशय मे पड़ल जाइत छलाह...।

एम्हर बल्ली बाबू केँ शंका भेलनि जे जँ हिनका सोचबाक बेसी अवसरि देबनि तँ ओ कहीं लखि ने जाथि। यद्यपि ओ बहुत सावधानी सँ जाल ओछौने छलाह। पट्ट शिष्य सभ केँ तीन हजार रुपैया द' क' निर्देश देने छलाह जे कोना-कोना मांस-मदिरा आ ब्लू फिल्मक इंतजाम गुप्त रीतिएँ कयल जाय। तथापि गुप्त-सँ-गुप्त बात फुजि जाइत छै। तेँ बल्ली बाबू प्रिंसिपल साहेब केँ आब बेसी समय देब' लेल तैयार नहि छलाह। ओ अपन गेंद केँ खूब थूक लगा क' घसलनि... चमकौलनि... हाथ पर नचौलनि आ फेंकबा काल स्पिन करा देलथिन, ''हँ, आरो लोक सभ छलै। मुदा, ककरो किछु नहि बिगड़तै। सभ टा दारोमदार अपनहि पर पड़त। अपने सभ सँ बुजुर्ग छलिऐ ओहि ठाम। मना क' सकैत छलिऐ। से तँ भेल नहि। कचरि-कचरि क' मुर्गा खयलहुँ... ढेकरि-ढेकरि क' पीलहुँ आ आँखि चियारि-चियारि क' नहि जानि की-की देखलहुँ। आ जकरा सभ द' अपने इशारा क' रहल छिऐ ने से सभ तँ एक्के सुर मे कहत जे योजना प्रिंसिपले साहेबक छलनि... अपन सखी केँ प्रसन्न करय चाहैत छलाह। नहि मानितियनि तँ कोनो प्रसंगे कोनो बहन्ने ओलि सधा लितथि...।''

तेहन सधल गुगली छलै जे प्रिंसिपल साहेबक विकेट लेने-देने उड़ि गेलनि। हुनका हाथ-पयर सुन्न पड़ैत बुझि पड़लनि...। ओ माथा पकड़ि कनेक काल जड़ भेल बैसल रहलाह...। अंततः फुसफुसाइत स्वर मे हुनक मुँह सँ बहार भेलनि, ''ठीक छै...।''



डायरीक पन्ना पर कै

जाड़क रौद बहुत जल्दी मकमका जाइत छै मुदा जाइतो-जाइतो एतेक तँ कइए जाइत छै दिग्घीक हरियर पानि केँ परेशानीक अनुभव होअ लगैत छै...। नित्य एहि समय मे आबि क' विचि भभक उठैत छै दिग्घीक पानि मे सँ...। गीता भवनक-प्रांगण मे छौंड़ा सभ एखन खेलिए रहल छल... अन्नपूर्णाजी सेहो जागल नहि छलथिन... एम्हर प्रिंसिपल साहेब...।

आगाँ मे सेंट्रल टेबुल पर राखल बहुमूल डायरीक उनटल दुनू पृष्ठ...। वाम कात सोलह जनवरी शुक्र दिन आ दहिन कात सत्रह जनवरी शनि दिन...। दुनू पृष्ठ खाली। काल्हि राति मे डायरी नहि लिखल जा सकल रहनि...। कोना लिखितथि?

वोमेटिंग टेंडेंसी केँ शांत करबाक लेल किछु देर धरि पंखाक हवा खयलाक बाद जखन हुनक मोन कनेक हल्लुक भेल रहनि तखन घर जयबाक लेल विदा भेल रहथि...। सरदार तैयार रहनि पहुँचाब' लेल मुदा वैह मना क' देने रहथिन। पत्नी केँ शंका होइतनि। उषा जी केँ पहुँचा देब' लेल सरदार केँ कहि ओ अपने सँ नहू-नहू गाड़ी चला क' घर आयल रहथि। घर पहुँचला पर एतेक होश नहि रहनि जे डायरी लिखितथि...। आइ जखन लिखय बैसल छलाह तँ काल्हि सँ ल' क' आइ धरिक घटना क्रम पर सोचैत ओ अपनहि सँ पूछि रहल छलाह जे की सभ किछु लिखल जा सकैए...? आइ ने काल्हि ई डायरी...! यदि धिया-पुता पढ़त तँ की सोचत? ...ओ गौर सँ डायरीक दुनू खाली पन्ना केँ देखय लगलाह...। हुनका लागि रहल छलनि जेना चाक पर बैसल होथि...। ओहि घूर्णित अवस्था मे रतुकी नारी सभ भयानक-भयानक नागिनक रूप धारण क' लेने छलि...। ओहि फिल्मक जे-जे दृश्य आइ भोरक खुमारी मे मादक एवं उत्तेजनापूर्ण लागल छलनि... से सभ एखन रौरव नरक जकाँ वीभत्स आ घिनौन बुझा रहल छलनि। आ ताइ पर कुष्ट मे कलिकलि जकाँ संकट ई जे ओहि नरक मे सँ ससरि-ससरि क' भीषण-भीषण नागिन सभ जी लपलपबैत... भयानक दुर्गंध पसारैत हुनका देह मे लेपटायल जा रहल छलनि...। अचानक फेर हुनक मोन हौंड़' लगलनि... पेट मे मरोड़ बुझयलनि... आ यावत् ओ सम्हरितथि... सम्हरितथि ताबत् ओएअ... ओएअ करैत बोकर' लगलाह... डायरीक दुनू पन्ना पर दुर्गंधयुक्त कै पसरि गेलनि... अपनहुँ बेहोश भ' ओही पर ओंघरा गेलाह...।

संपर्क : द्वारा डॉ. पी.के. झा, पीजीटी (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय, कटिहार-854105, (बिहार)
मोबाइल : 9430038969